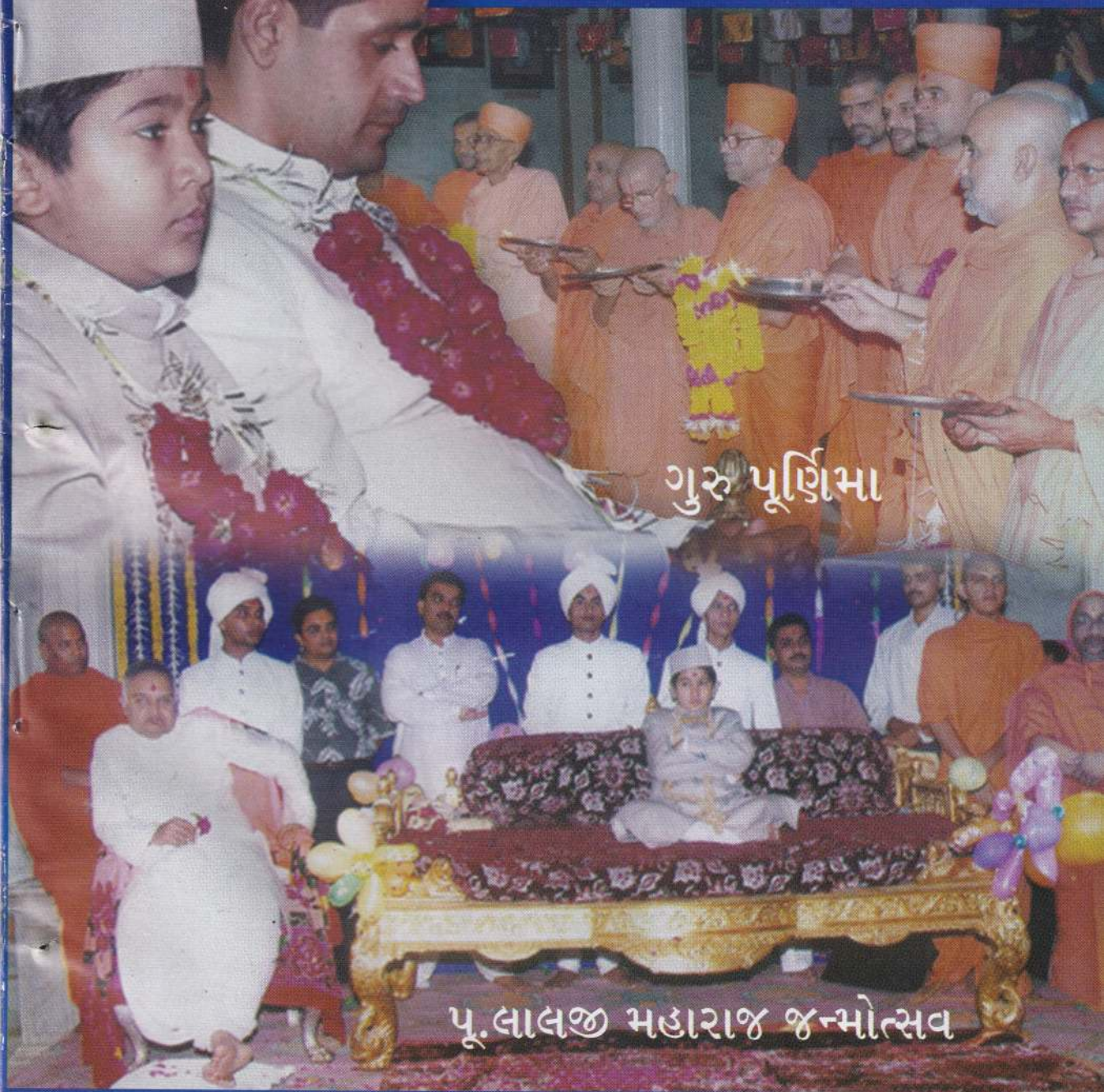
શ્રી સ્વામિનારાયણ

Rs. 5/-

SHREE SWAMINARAYAN

AUGUST '06

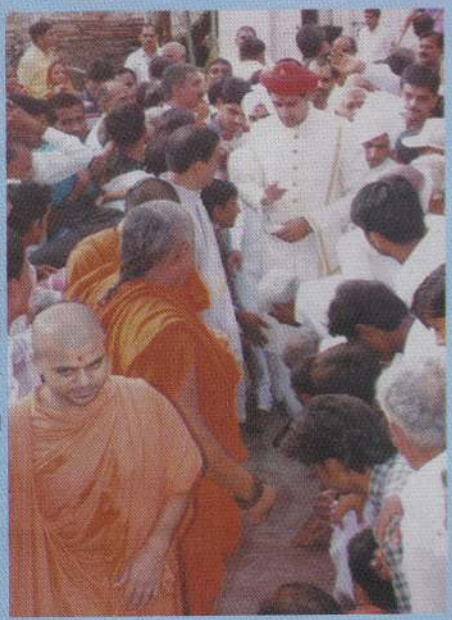




त्राडवा मंदिर में रजत द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में २२५ दिन की धुनि के प्रारंभ पर मंगल दीप प्रगट करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



जीवापर (मूलीदेश) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



गुरुपूर्णीमा के दिन देश-विदेश से आये हुए संत-हरिभक्त शिष्टाचारनुसार एक क्रम से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का दर्शन करते हुए ।



प.पू. लालजी महाराजश्री के जन्मोत्सव प्रसंग पर आरती उतारते हुए अग्रगण्य हरिभक्त ।



नेत्रामणी (ईडरदेश) गाँव में डॉ. के. के. पटेल के पुत्र के



मेमका (मूलीदेश) महिलाओं के श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर वृन्दावन स्वामी तथा संत प.पू. महाराजश्री का दर्शन करके आशीर्वाद ले रहे हैं ।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

SHREE SWAMINARAYAN श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ५ अगस्त -२००६

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	श्रीहरि के छठ्ठे वंशज प.पू. बडे महाराजश्री के सांनिध्य में पवित्र कैलाश मानसरोवर यात्रा	४
४.	'शतंजीवेम् शरदः'	५
५.	कृत्या को हनुमानजी ने सबक सिखवाया	८
६.	सत्संगकी मर्यादा	९
७.	मूर्तिको मन में धारण किये बिना कारण	११
८.	बहतेज का स्फुलिंग (प्रभाव)	१२
९.	हमारा नरनारायणदेव के साथ सीधा सम्बन्ध है	१४
१०.	सत्संग सुरभि : दूसरे कौन इतने समर्थ देव	१५
११.	सत्संग बालवाटिका (१) कलियुग के योगी (२) पढे विना विद्या मले ?	१६
१२.	प्रश्नपेटी	१८
१३.	भक्तिसुधा (१) शूरवीर भक्त सेर मिया (२) कठलाल की वृद्धा (३) सच्चाज्ञान (माया का स्वरुप)	१९
१४.	समाचार वृत्तांत	२२

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : sntemple@hotmail.com
www.swaminarayanmuseum.com / org

अस्मदीयम् तन्त्रीश्री की तरफ से.....

पवित्र चातुर्मास अर्थात् वर्षाऋतु एवं शरदऋतु का सुन्दर समन्वय । वर्षा एवं शरद दोनो ऋतु मनुष्य को आनंद एवं उत्साह युक्त करती है । वर्षा से पृथ्वी के जीव मात्र नवपल्लवित होते हैं । मनुष्य के भौतिक जीवन में धन धान्य की प्राप्ति होती है, इस के साथ ही मनुष्य के जीवन में आनन्द को उत्पन्न करने वाले विविध उत्सव भी वर्षा एवं शरद ऋतु में आते हैं ।

भगवान की प्रेम भक्ति को बढाने के लिए नाना विध झूलोत्सव की शोबा भी अलौकिक होती है । भक्तजनों की भावना से तैयार होने वाले झूलोत्सव में प्रेमरुपी डोरी से भगवान झूलते हैं ।

झरमर-झरमर मेहा बरसे, गरजे-गरजे घनघोर ।
हिंडोरडा में होरे होरे झूलो महाराज ।।

झूलोत्सव के बाद जन्माष्टमी- उत्सव - गणपति उत्सव जलजीलणी एकादशी उत्सव, शरदऋतु में नवरात्री उत्सव, विजयादशमी उत्सव, दीपावली उत्सव आता है ।

इस प्रकार के उत्सव मनुष्य के जीवन में आनंद भर देते हैं । उत्सव का आनन्द उत्सव पूर्ण होने के बाद भूल जाता है । लेकिन जीवन में भगवान के मिलने का आनंद भूलना नहीं चाहिए । शाक-भांजी में सबकुछ भूलजाय लेकिन नमक भूल जाय तो चलेगा ? इसी प्रकार मुमुक्षु के जीवन में दूसरे सभी कार्य गौण हो तो चलेगा लेकिन भगवान को नहीं भूलना चाहिए । भगवान के मिलने का आनंद सदा हृदय में धारण किये रहना चाहिए । वचनामृत में भगवान श्रीहरि कहते हैं कि मुमुक्षुओं को भगवान के मिलने का सदैव भाव रखना चाहिए । मुझे तो भगवान मिले हैं । मैं इस परमतत्व को प्राप्त करने का धनी हूँ । स्वभाव एवं अंतःशत्रुओं का दास नहीं हूँ । भगवान के चरण कमल का सेवक हूँ । इस के साथ सेवक भाव से एवं दास भाव से भगवान की सेवा भक्ति-भजन तथा उपासना करके, भगवान को प्रसन्न करके प्रत्येक भजन करके अपने जीवनको धन्य बना लें ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

जुलाई -२००६

२. प.भ. बचुभाई डी. अमीन के यहाँ पदार्पण, वस्त्रापुर ।
प.भ. मनसुखभाई चतुरभाई मिस्त्री के यहाँ पदार्पण, सेटेलाईट ।

६. लूडावाला (पंचमहाल) श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों के) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

७. संत महादीक्षा विधि स्वहाथों से संपन्न किये ।
प.भ. गोविंदभाई जीवराजभाई ठुमर के यहाँ पदार्पण, वहीं अन्य के यहाँ पदार्पण नवा नरोडा ।
प.भ. राजेशभाई रणछोडभाई पंचाल के यहाँ पदार्पण तथा अन्य के यहाँ भी पदार्पण, वटवा ।

९. श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा श्री स्वामिनारायण रजत द्विशताब्दी के उपलक्ष्य में आयोजित २२५ दिन की अखंड महाधुनि के प्रसंग पर पदार्पण ।

११. गुरुपूर्णिमा के दिन श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में देश-विदेश के हजारों आश्रितो ने गुरुपूजन करके आशीर्वाद प्राप्त किया ।

१२. प.भ. किशोरभाई चोकसी के हिमालय ज्वेलर्स में पदार्पण, बापूनगर ।
वही पर प.भ. गोरधनभाई सीतापरा तथा अन्य हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण, बापुनगर ।
प.भ. संजयभाई आर. सोनी के श्रीजी ज्वेलर्स के नये शोरुम में पदार्पण, माणेक चौक ।

१३ से २५. अमेरिका में फ्लोरिडां श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव तथा न्यूजर्सी में सत्संग युवा कैम्प प्रसंग पर पदार्पण ।

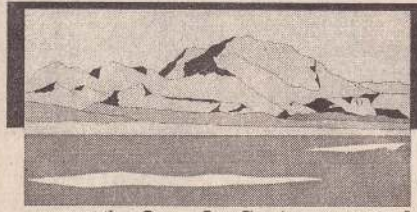
२७. ऊँझा मंदिर में आयोजित हिन्डोले के महोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
वही पर प.भ. प्रवीणभाई मूलचंदभाई के यहाँ पदार्पण ।

२८. प.भ. जीतेन्द्रकुमार मगनलाल लीलाधर के यहाँ पदार्पण, प्रहलादनगर ।

विज्ञप्ति

श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के सभी हरिभक्तों को सूचित किया जाता है कि अपने संप्रदाय के देश विभाग के लेख तथा सत्संगिजीवन आदि शास्त्रों के नियम प्रमाणानुसार त्यागी-गृही सभी के गुरु स्थानपर विराजमान धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की आज्ञा ही सर्वोपरि है । यही परंपरा चली आ रही है । इसी प्रमाणानुसार संप्रदाय के किसी गाँव में या मंदिर में संत हरिभक्त के पास दान धर्मादा लेने या कथावार्ता करने आवे तब आचार्य महाराजश्री का आज्ञा पत्र लेकर आवें । इस संप्रदाय की परम्परा का प्रत्येक संत तथा हरिभक्त पालन करें तथा महाराजश्री की आज्ञा का सरलता से पालन हो इसलिए अहमदाबाद देश के गाँव में आनेवाले संत हरिभक्तों के पास से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञापत्र है या नहीं इसकी जानकारी अवश्य करें ।

आज्ञा से -
महंत स्वामी



श्रीहरि के छठ्ठे वंशज प.पू. बडे महाराजश्री के सांनिध्य में

पवित्र कैलाश मानसरोवर यात्रा

इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण अपने माता पिता के स्वधाम गमन बाद ११ वर्ष की कोमल अवस्था में वन विचरण करना प्रारम्भ किये थे। आज से २१५ वर्ष पूर्व जहाँ इस विश्व का माहान वैज्ञानिक भी नहीं पहुंच सका था। ऐसे भयंकर-विकट हिमालय के दुर्गम पहाडो, नदियों, सरोवरों को पार करते हुए श्री नीलकंठ वर्णी कैलाश मानसरोवर पर पधारे थे, इतना ही नहीं बल्कि अति उग्र तपश्चर्या करके इस मानसरोवर को अलौकिक दिव्य तीर्थ भी बना दिये। जिसका वर्णन स.गु. आधानंद स्वामी ने अपने ग्रंथ श्रीहरिचरित्रामृत सागर के पुर-२, तरंग-२० में इस प्रकार वर्णित किया है - ''मानसरवोर महाविशाला, फूल रहे मही कमला लाला, हंस बैठे तेहिं तीर अपारा, मोतिन को सब करत चारा, सो सर में हरि नहाये जाई, मगन भये महा हुलसाई जहां रहे हरि पांचहि दीना, सब हंस तेहि दर्शन कीना।'' आज २१५ वर्ष के बाद संप्रदाय में सर्वप्रथम श्रीहरि के अपर स्वरुप श्री नरनारायणदेव पीठ के छठ्ठे वंशज आचार्यश्री प.पू.ध.धु. आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री संत-हरिभक्तों के विशाल समूह के साथ पवित्र कैलाश-मानसरोवर की यात्रा में पधार रहे हैं। जो अपने समग्र संप्रदाय के लिए गौरव तथा अति आनन्द की बात है।

देश विदेश के अनेकों हरिभक्त प.पू. महाराजश्री के साथ यात्रा करने की उत्कंठ व्यक्त किये हैं। यथार्थ रुप से ऐसा समय जीवन में मिलना बड़ा दुर्लभ है। इसलिये यात्रा में आने की इच्छा वाले प्रत्येक हरिभक्त सर्व प्रथम अपना रजिस्ट्रेशन अवश्य करालें।

यात्रा विषयक सम्पूर्ण जानकारी

कुल दिन १६ मार्ग - जमीन मार्ग से काठमांडु-झांग्मु - कैलाश-झांग्मु

१.	३०-९-०६	काठमांडु आगमन - वही ठहरना।
२.	१-१०-०६	पशुपतिनाथजी - बुद्धनाथजी इत्यादि का दर्शन।
३.	२-१०-०६	कांठमांडु से न्यालमजीप द्वारा १५० की.मी. ८ से ९ घन्टे वहीं रात्रि विराम।
४.	३-१०-०६	न्यालम ठहरना।
५.	४-१०-०६	न्यालम से सागा २५० कि.मी. ७ से ८ घटे रात्रि निवास (गेस्ट हाउस)
६.	५-१०-०६	सागा से पर्याग २२५ कि.मी. ७ से ८ घंटे वही विश्रांति।
७.	६-१०-०६	पर्याग से मानसरोवर २५० कि.मी. ९ से १० घन्टे वहीं रात्रि विराम, मानसरोवर गेस्ट हाउस अथवा टेन्ट में।
८.	७-१०-०६	मानसरवोर स्नान पूजा अर्चन वहाँ से दारचेन प्रयाग, रात्रि विराम (गेस्ट हाउस)।
९.	८-१०-०६	जीप द्वारा दारचेन से तारबोचे। यहाँ से कैलाश परिक्रमा का प्रथम दिन प्रारम्भ। तारा बोचे से डीरापुक १२ की.मी. ६ से ७ घन्टे रात्रि विराम टेन्ट में।
१०.	९-१०-०६	परिक्रमा का दूसरा दिन हीरा पुर से डोरमाला होकर झुथुलपुक २१ कि.मी. १० से ११ घन्टे रात्रि विराम टेन्ट में।
११.	१०-१०-०६	परिक्रमा तीसरे दिन तथा अंतिम दिन - झुथुलपुक से होरक्यु मानसरोवर के किनारे ८ कि.मी. ५ घन्टे, रात्रि विराम टेन्ट में।
१२.	११-१०-०६	होरक्यु से पर्याग रात्रि विराम गेस्ट हाउस।
१३.	१२-१०-०६	पर्याग से सागा - रात्रि विराम गेस्ट हाउस।
१४.	१३-१०-०६	सागा से न्यालम रात्रि विराम।
१५.	१४-१०-०६	न्यालम से झांग्मुकस्टम इमीग्रेशन की विधि पुरी को लगजरी वश द्वारा काठमांडु तरफ प्रयाण।
१६.	१५-१०-०६	बस द्वारा काठमांडु से दोपहर में एरपोर्ट पर जाने के लिए रवाना।

प्रति यात्रिक खर्च - ६३०००/- (विदेश रहनेवाले पासपोर्ट धारक) अमेरिकन डोलर २०५१/-

काठमांडु से कैलाश मानसरोवर काठमांडु (इस यात्रा में देश-विदेशके भक्तगण अपने-अपने परिवार के साथ भी आसकते है)

इस यात्रा में १२ वर्ष से ७० वर्ष तक के लोग भाग ले सकते हैं। यात्रा का समय १६ दिन का है। पासपोर्ट होना जरुरी है। यात्रा प्रारम्भ होने तथा पूर्ण होने का स्थल दिल्ली एयरपोर्ट इन्टरनेशनल एयरपोर्ट।

हृदय तथा दम (अस्थमा) के रोगी यात्रा में भाग नहीं ले सकते हैं। ता. ३०-८-०६ से पूर्व रजिस्ट्रेशन होना आवश्यक है।

विशेष जानकारी के लिए संपर्क : नीलकंठ टूर्स एन्ड ट्रावेल्स
४१२ ए/बी प्लेटीनीयम प्लाजा, जजीस बंगलो रोड, बोडकदेव, अहमदाबाद-५१,
मो. : ९९२५१२५८५३, ९८९८११४६४६ ● फेक्स :०७९ - २६८४००२८
E-mail : info@neelkanthtoursandtravels.com / Kailasmansarovar99@yahoo.com
URL : www. kailash-yatra.com



'शतंजीवेम् शरदः'

ब्लड प्रेश (रक्त का दबाव)

ब्लड प्रेशर क्या है ?

शरीर में घूमते हुए रक्त का बहन करने वाली नाडी की दीवाल पर जो दबाव करे उसे ब्लड प्रेशर कहा जाता है। रक्त का दबाव दो प्रकार से होता है। १. सीस्टोलिक (अर्थात् हृदय के स्पन्दन के साथ) २. डायस्टोलिक (अर्थात् हृदय दो स्पन्दन के बीच में आराम करते समयका) यह क्रम कभी कभी ऊपर का नीचे, नीचे का ऊपर भी देखने में मिलता है। सामान्य स्थिति में व्यक्ति का सीस्टोलिक प्रेशर १२० mmHg से कम होता है। तथा डायस्टोलिक प्रेशर ८० mmHg से कम होता है। यह संख्या १२० से ८० अथवा $\frac{120}{80}$ इस प्रकार से रखी जा सकती है।

हाई ब्लड प्रेशर

हाई ब्लड प्रेशर के कारण हृदय रोग तथा किडनी की बिमारी हो सकती है। स्टोककी संभावना भी रहती है। हाई ब्लड प्रेशर अधिक खतरनाक होता है। कारण यह कि इस बिमारी की सूचना का कोई निशान नहीं होता है। उम्र, जाति- प्रजाति या लिंग इत्यादि के भेद विना किसी को भी यह बिमारी हो सकती है। ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि प्रत्येक चार अमेरिकन युवको में एक को यह बिमारी होती ही है। एकबार यह विमारी (हाईब्लड प्रेशर की) हो गयी, तो जिन्दगी भर जाती नहीं है। आप उचित सावधानी से ही इस बिमारी से बच सकते है, यदि यह विमारी हो गयी है तो नियंत्रित किया जा सकता है।

हाईब्लडप्रेशर का निदान :

रक्त चांप का नियमित देखभाल करते रहना चाहिए। जिससे हाईब्लडप्रेशर की बिमारी का ख्याव आता रहे। प्रायः डोक्टर दो या तीन वार रक्तचांप का माप करके हाईब्लडप्रेशर का निदान करते हैं। रक्तपांच का माप अमुक-अमुक समय के अंतर में किया जाता है। १४०/९० पर स्थिर अंक को हाईब्लडप्रेसर कहा जाता है।

कितने लोग तो डॉ. के पास जाते ही हाईब्लडप्रेशर का अनुभव करने लगते हैं। इस मानसिक स्थिति में "ब्हाईट कोट हाईपर टेन्शन कहा जाता है।" आप के डॉ. को ऐसी जानकारी हो तो वह आपको अपने घर पर निदान करने की अनुमति दे सकता है। या "एम्ब्ल्युलेटरी ब्लड प्रेशरयोलिटर" नाम का साधन पहनने की सलाह दे सकता है। सामान्य ढंग से यह साधन चौवीस घंटे पहनना पडता है। उम समय हर आधा घंटे पर रक्त चांप का ख्याल आता रहता है। इस प्रकार में हाई ब्लडप्रेशर के निदान समय इससे अधिक जानकारी करेंगे।

हाईब्लडप्रेशर तथा प्रि हाईप्रेशर टेन्शन क्या है ?

ब्लडप्रेशर अर्थात् रक्तवाहिनी की दीवाल पर रक्त का दबाब होना। दिन में दबाव का न्यूनाधिक्य होता रहता है। रक्त का दबाव जब अधिक समय तक रहता है तथा अधिक रक्त चांप रहता है तो उसे हाई ब्लड प्रेशर कहते है।

हाईपर टेन्शन

यह हाई ब्लडप्रेशर का डॉक्टरी नाम है। हाई ब्लडप्रेशर काफी खतरनाक होता है। कारण यह कि वह हृदय से अधिक कार्य करवाता है। रक्तवाहिनी की स्थिति स्थापकता को खतरनाक बना देता है। रक्तवाहिनी की इस जल्दी टूट जाने वाली स्थिति को स्थेरीस्लोरोसीस कहा जाता है। इस स्थिति में हृदय रोग तथा स्ट्रोक की शक्यता बढजाती है। ये दोनो ही मृत्युतक ले जाने वाले है। यह अमेरिकन समाज का अध्ययन है। हाईब्लड प्रेशर के कारण अन्य मुश्किली भी खडी हो सकती है। जिसमें कन्जेस्टीव हार्ट फेईल्पर, किडनी की बिमारी तथा अंधापन मुख्य होता है।

१४०/९० mmHg अथवा इससे भी ऊँचे स्तर पर हाई ब्लडप्रेशर की निशानी है। पैंसठ वर्ष की उम्र से अधिक वाले लोग प्रायः इस बिमारी से पीडित होते हैं। यदि आपका ब्लडप्रेसर १२०/८० तथा १३९/८९ के बीच में रहता हो तो उसे प्रि-हाईपर टेन्शन कहा जायेगा। इसका मतलब यह हुआ कि इस समय आपको ब्लड प्रेशर नहीं हैं। परंतु सन्निकट में होने की संभावना है। तंदुरस्त जीवन शैली का सहारा लेकर हाईब्लडप्रेशर की बिमारी से बचा जा सकता है।

जो लोग ५५ वर्ष में भी हाई ब्लड प्रेशर नहीं है उन्हे यह बिमारी होने की संभावना ९०% है। अर्थात् हाई ब्लड प्रेसर यह एक ऐसी स्थिति है जिसका कभी न कभी सामना तो करना होगा।

ब्लडप्रेशर का दोनो अंक बडे आवश्यक हैं। परंतु जो लोग ५० वर्ष या इससे अधिक वय के हैं उनके लिये सीस्टोलिक प्रेशर का अंक हाई ब्लड

प्रेशर के लिये विशेष निर्णायक होता है। सीस्टोलिक प्रेशर अर्थात् ब्लड प्रेसर की रुपरेखा या प्रारंभ का अंक, ऊपर का दबाव अर्थात्, १४० mmHg या इससे अधिक।

सिस्टोलिक ब्लडप्रेशर क्या है ?

हृदय में जब धबकारा ही उस समय धमनी में वहता रक्त नाड़ी की दीवाल पर जो दबाव होता है उसे सीस्टोलिक ब्लड प्रेशर कहते हैं। ब्लडप्रेशर में यह दबाव का अंक प्रथम स्थान पर या ऊपर की तरफ लिखा जाता है। आगे के परिच्छेद में बताये गये १४० mmHg प्रेशर हार्डब्लडप्रेशर कहा जाता है तथा वह सिस्टोलिक ब्लडप्रेशर है। यह आवश्यक नहीं कि हाई ब्लडप्रेशर हो तब डायस्टोलिक ब्लडप्रेशर भी हाई है। संयोग वश दोनो प्रकार के दबाव ऊंचे स्थिति के हो तो आईसोलेटेड सीस्टोलिक हाईपरटेन्शन के रुप में जाना जाता है। जिसे संक्षेप में ISH के रुप में प्रदर्शित किया जाता है।

क्या आई.सोलेटेड सिस्टोलिक हाई ब्लडप्रेशर का प्रमाण अधिक है :

हाँ अमेरिकन लोगो में इस प्रकार की फरीयाद अधिक मात्रा में होती है। प्राय: उम्र बढने के साथ अमेरिकन सिस्टोलिक ब्लडप्रेशर के रोगी होते है। पंचावन वर्ष पहुंचते उनका डायस्टोलिकप्रेशर भी बढने लगता है। डायस्टोलिकप्रेशर पंचावन वर्ष के बाद धीरे-धीरे घटने लगता है। साठ वर्ष के ऊपर वाले हाईब्लडप्रेशर के रोगी करीब ६५% लोग ISH की सिकायत करते हैं। यह संभव है कि आपको ISH होते हुए भी स्वस्थता का अनुभव होने लगे। अन्य प्रकार के ब्लडप्रेशर की तरह दूसरा कोई लक्षण नहीं है। ISH या अन्य प्रकार का ब्लडप्रेशर है या नहीं उसकी जानकारी के लिए नियमित जॉ. से चेकअप कराते रहे।

क्या आई.एस.एस.एच. ब्लड प्रेशर खतरनाक है ?

ब्लडप्रेशर चाहे किसी प्रकार का हो, यदि उसका उचित इलाज नहीं हुआ तो खतरनाक साबित हो सकता है। ब्लड प्रेशर टेस्ट के दोनो अंक समान रुप से आवश्यक है। परंतु कितने रोगियों के लिये सिस्टोलिक ब्लडप्रेशर का अंक बहुत महत्वपूर्ण का है। मध्यमवय तथा उमरदराज लोगों के लिए सिस्टोलिक प्रेशर का अंक हाईब्लडप्रेशर का निदान बडी सरलता से किया जा सकता है।

यदि इस दबाब को समयसे नियंत्रित किया जाय तो सिस्टोलिक प्रेशर स्टोक, हार्टएटेक या कन्जेस्टिव हार्ट फेईल्योर में परिमिमित होता है। अनियंत्रित प्रेसर किडनी फेईल्योर तथा अंधापा भी आने की संभावना रहती है। हाईब्लडप्रेशर को भले निर्मूल न किया जा सके, परंतु उसे नियंत्रण से रखा जा सकता है। डॉ. के निरीक्षण से स्पष्ट हुआ है कि सिस्टोलिक हाईब्लडप्रेशर को नियंत्रित करके रोगी को बचाया जा सकता है। जीव बचाने के साथ बिमारी की गंभीरता को कम किया जा सकता है। प्राय: अमेरिकन अपने सिस्टोलिक हाईब्लड प्रेशर को काबू में नहीं रखते है।

क्या कोई विशेष प्रकार का निदान आवश्यक है ?

अन्य प्रकार के ब्लड प्रेशर में जिस प्रकार की व्यवस्था रखनी चाहिए। उसे ध्यान में रखकर ISH को नियंत्रित कर सकते हैं। जीवन पद्धति में फेरफार करके तथा दवा द्वारा ISH को नियंत्रित किया जा सकता है। प्रत्येक प्रकार के हाईब्लड प्रेशर को एक ही गुरुमंत्र है कि जिस कीसी तरह काबू में रखा जाय। ब्लड प्रेशर का नियंत्रण करके १४०/९० mmHg से ऊपर नही जाने देना चाहिए। आपका ब्लड प्रेशर उपरोक्त अंक से ऊपर जा रहा है तो तत्काल डॉ. की सलाह लें। आपकी औषधि तथा जीवन पद्धति में फेरफार करने की जरुरत है। जैसे भोजन में नमक का प्रमाण कम करना तथा प्रिस्क्राईब्ड दवा में फेरफार कराना।

डायस्टोलिक ब्डप्रेशर क्या है ?

हृदय के दो धडकन के बीच में नाडियो के सहारे बहता हुआ रक्त उर्मा के दबाव को डास्टोलिक ब्लडप्रेशर कहा जाता है। ब्लडप्रेशर का अंक नीचे लिखा जाता है।

छोटी उम्र के लोगो में डायस्टोलिक ब्लडप्रेशर की अवगणना नहीं करनी चाहिए, इस में हाईपर टेन्शन का अंक है।ऐसे लोगो में डायस्टोलिक ब्लडप्रेशर का अंक जितना ऊँचा जायेगा, उतने प्रमाण में हार्ट अटेक, स्ट्रोक, किडनी की निष्फलता का प्रभाव बढेगा। बढते हुए सीस्टोलिक ब्लडप्रेशर के कारण किडनी को खतरा रहता है। स्ट्रोक या हार्ट अटेक का हमला भी हो सकता है। आपका डोक्टर दोनो प्रकार का अध्ययन करके आपके ब्लडप्रेशर का प्रकार निश्चित करता है, इसी के अनुसार निदान, जीवन शैली तथा उपचार पद्धति को बताता है।

हाईब्लड प्रेशर इतना आवश्यक क्यों ?

हाई ब्लडप्रेशर बहुत खतरनाक है। कारण यह कि ऊपर की तरफ दबाव करने से हृदय को अधिक कार्य करना पडता है। इस दबाव के कारण नाडी की दीवाले कठिन हो जाती है। इसी दबाव से हृदय रोग तथा स्ट्रोक का खतरा भी संभव हो जाताहै। ये दोनो विमारीयां

अमेरिकनो की मृत्यु का प्रथण तथा तीसरे क्रम के कारण है । यह दबाव अन्य परेशानियां भी खडा करता है । जिसमें हार्टफेइल, किडनी की बिमारी, अंधापा मुख्य है ।

आपकी शरीर पर हाईब्लड प्रेशर का असर :

मुख्य असर अधोनिर्दिष्ट है -

स्ट्रोक : स्ट्रोक का आक्रमण हाई ब्लडप्रेशर के कारण होता है ऊपर का दबाव कमजोर रक्त वाहिनियो में अंगण खंगड की सर्जना करता है तथा अंगड-खंगड से रक्त विकृत होकर मस्तक में फैलता है । इस लिकेज के कारण अखंड-खंगडका आक्रमण होता है । सकरी हुई उन धमनियों में यदि रक्त की गांठ हो जाय तो रक्त प्रवाह रुक जाता है । इसी कारण स्ट्रोक का हमला होता है । इन दोनो कारणो में हाईब्लडप्रेशर ही मुख्य कारण है ।

दृष्टि की खराबी : हाईब्लडप्रेशर के कारण आंख में फैली रक्त कोशिकायें कमजोर बना देता है स्पष्ट देखा नहीं जा सकता । धूसर दिखाई देता है, बाद में अंधापा आ जाता है ।

रक्तवाहिनी : उम्र बढने के साथ शरीर में फैली रक्त वाहिनियां अपनी स्थिति स्थापकता को खो देती है । तथा जल्दी टूट जाने वाली हो जाती है । खास करके हृदय, मस्तिष्क, किडनी की रक्त वाहिनी का टूट जाना ही खतरे की घंटी है । अधिक समय के बाद हृदय किडनी को खतरा होने की संभावना है ।

किडनी को नुकसान : किडनी एक प्रकार की छननी है । जो शरीर की गंदगी को कचरे को छानकर बाहर निकालती है । हाईब्लडप्रेशर के सातत्य के कारण किडनी में फैली हुई रक्तवाहिनी की दीवाले स्थिति स्थापकता से रहित हो जाती है । ये नलिकायें सकरी हो जाती है । ये अक्षमनिलयां थोडे प्रवाह को साफ करती हैं लेकिन रक्त की गन्दगी को साफ नहीं करपाती है । कुछ समय बाद किडनी निष्फल हो जाती है । किडनी निष्क्रिय होते ही दर्दी को डायालिसिस पर रखना पडता है, या किडनी ट्रान्सप्लांट करना पडता है ।

हार्टअटेक :

हाईब्लडप्रेशर ही हार्टअटेक का मुख्य कारण है । रक्त वाहिनीयाँ औक्सजीन बाले रक्त को हार्ट के स्नायुओं में पहुंचाती है । हार्ट को यदि पूर्ण रुप से आक्सजीन न मिले तो छाती में दुखने लगता है । जिसे डॉ. भाषा में ''एन्जीना'' कहा जाता है । रक्तप्रवाह यदि रुक जाय तो हार्टएटेक होता है ।

कन्जेस्टिव हार्ट फेईल्योर :

इसे संक्षेप में C.H.F. कहते हैं । इस का मुख्य कारण है हाई ब्लडप्रेशर। C.H.F. यह एक गंभीर स्थित है । इस स्थिति में हृदय पूर्ण रुप से रक्त को पहुंचा नही सकता । शरीर में पूर्ण रुप से रक्त का प्रमाण वह नहीं पाता, जिससे शरीर को पूर्ण स्वत्व नहीं मिल पाता है ।

हाईब्लड प्रेशर होने के कारण :

हाईब्लड प्रेशर के लिये बहुत कारण है । जिसमें पतली हुई धमनियां, सामान्य की अपेक्षा रक्त की अधिकता या हृदय की गति शीलता, इन कारणो से हाईब्लडप्रेशर होता है । इस में कोई कारण धमनी की दीवाल पर दबाव करता है । अन्य डाक्टरी समस्याओं के कारण भी हाई ब्लडप्रेशर होता है । प्रायः यह कारण जाना नहीं जा सकता । हाईब्लडप्रेशर स्थायी रुप में खत्म नहीं किया जा सकता । उसे रोका जा सकता है या नियंत्रित किया जा सकता है ।

हाईब्लडप्रेशर किसे हो सकता है ?

इस बिमारी का प्रमाण बहुत विशाल है । लगभग साढे छ करोड युवा अमेरिकन इस विमारी से घिरे हुए हैं । प्रत्येक तीन में से एक अमेरिकन धिरा हुआ है । यह विमारी अफ्रिकन मूल के अमेरिकनो विशेष है । इन्हे अन्य अमेरिकनों की अपेक्षा छोटी उम्र में ही विमारी आ जाती है । बहुत सारे अमेरिकन जो बड़ी उम्र के हैं उन्हें यह विमारी लगती है । लेकिन यह तंदुरस्त वार्धक्य नहीं है । मध्यमवय के अमेरिकनों में इस बिमारी की संभावना ९०% प्रतिशत होती है । अन्य लोगों में यह बिमारी बजनदार शरीर के कारण होती है । कुछ लोगो में वारिस में मिलती है ।

रोकने के उपाय :

स्वस्थ जीवन पद्धति अपनाकर इस विमारी को रोका जा सकता है । स्वस्थजीवन पद्धतिमें शरीर में वजन की सप्रमाणता, शारीरिक सक्रियता, संतुलित आहार, चरबी तथा नमक का प्रमाण कम हो ऐसा भोजन, फल, एवं हरा शाग प्राधान्य रखना चाहिए । इस विषय में चर्चा आगे के लेख में करेंगे ।

हाईब्लडप्रेशर की ट्रीटमेन्ट :

ब्लड प्रेशर को कन्ट्रोल में रखने के लिए उचित वर्तन करना आवश्यक है । ब्लडप्रेशर को १४०/९० इससे नीचे रखने का अपना लक्ष्य होना चाहिए । विशेष रुप से जिन्हें डायाबिटेस एवं किडनी की बिमारी हो वे ब्लडप्रेशर को उपरोक्त अंक से कम रखें । स्वस्थजीवन पद्धति एक मात्र उपाय है । स्वस्थ जीवन पद्धति में औषधि भी सहायक है ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अमेरिका में I.S.S.O. द्वारा ''सेवा'' नाम की संस्था पीछे कई वर्षो से कार्यरत है । जिसके हेल्थ ब्रोश्यर में से साभार ।

कृत्या को हनुमानजी ने सबक सिखाया

- पार्षद घनश्याम भगत गुरु जगतप्रकाशदासजी (धोळका)

एक दिन की बात है भक्तिमाता बालस्वरुप घनश्याम महाराज को घर के अन्दर स्तनपान करा रही थी और उधर कालीदत्त ने मलिन शक्ति से पता लगा लिया कि घनश्याम का जन्म हो गया अब मेरे पाप का भी अन्त हो गया अब मै किसी पर अत्याचार नही कर पाऊँगा अगर मै इस छोटे बालक को खतम कर देता हूँ तो मै भगवान बन जाऊँगा और लोग मेरी पूजा करेंगे मुझे थाल खिलायेंगे जैसे मै कहूँगा वैसे ही यह दुनिया करेगी मगर कालीदत्त को पता नही होगा कि यह घनश्याम देखने मे बालक लगते है। पर इनके बालक इतने है कि हम कल्पना भी नही कर शकते है सबको मारने वाले काल ये ही हैं। इन्ही से जीवनदान मागते है इनकी सम्पूर्ण बडाई कोई कर ही नही सकता पर असुर को ऐसी वृति हो ही नही शकती अपने आपको सर्व शक्तिमान समझने वाला दुष्ट कालीदत्त जिसने अपने मायावी शक्ति से कृत्या को उत्पन्न किया और कहा कि तुम सब धर्म देव के यहाँ जाओ और उनके यहाँ एक बालक का जन्म हुआ है। वह बालक हमारा शत्रु है अगर वह बालक बडा हो गया तो हम सबकी मायावी शक्ति को खत्म कर देगा और साथ मे हम सबको भी। इसीलीये तुम सब जाओ और इस बालक को खत्म कर दो वहाँ से सब कृत्या चल दी मार्ग मे उपद्रव करते धर्मदेव के यहाँ आ पहुंची और यहाँ आकर देखा तो भक्तिमाता की गोद में प्रभु शयन कर रहे है कृत्याओने देखा समझ गई यही वह बालक है जिसको मारने हेतु कालिदत्त ने हमे भेजा है इतना सोचकर सब कृत्या भक्तिमाता की तरफ झपटी माताजी तो डर गई माताजी ने कभी इतनी कदरुप स्त्री नही देखी थी माताजी जब तक मदद की आवाज लगाती तब तक कृत्याने माताजी की गोद से घनश्याम महाराज को उठालिया भक्तिमाता के मुखसे आवाज भी नही निकल पाई और भक्तिमाता मूर्छित होकर जमीन पर गिर गई उधर कृत्या जाते समय कहने लगी भक्ति हम सब तेरे घनश्याम को ले जारहे है। तुझे जो करना है वह कर लेना इतना कह कर कृत्या बालस्वरुप घनश्याम महाराज को लेकर पूर्व दिशा मे चली गई इधर कुछ देर हुआ धर्मदेव कही बहार गये थे वहा से वापस आये देखातो भक्तिमाता बेहोस थी। धर्मदेव को हुआ ऐसा कैसे हुआ और धर्मदेव जल्दी से धर मे पानी भरने के लिये गये वहाँ पालने मे देखा तो घनश्याम नहीं थे अत: धर्मदेव को भी मूर्छा आने लगी कि मेरा लाडला घनश्याम कहाँ चला गया और दौडते-दौडते आकर भक्तिमाता के माथे पर पानी छाटने लगे कुछ समय पश्चात् भक्तिमाता को होश आया धर्मदेव जी बोले क्या हुआ देवी तुम कुछ बोलती क्यो नहीं प्राण आधार घनश्याम को राक्षसी जैसी स्त्रियां उठा ले गई और स्वामी मुझे बहुत डर लग रहा है धर्मदेव जी बोले देवी तुम चिंता न करो मेरे पिताजी ने कहा था। जब कोई कष्ट आये तब कष्टभंजन (हनुमानजी) को याद करना तो तुम्हारा कष्ट दूर करेंगे भक्तिमाता ने कहा अब मुझे किसी पर भरोसा नही रहा मेरे बच्चे ने क्या बिगाडा था। फिर धर्मदेवने समझाया और धर्मदेव एवं भक्तिमाता ने कष्टभंजन देव की स्तुति की हनुमानजी साक्षात प्रगट हुए और विराट रुप दिखाया हनुमानजी ने माता को प्रणाम किया हनुमानजी कहने लगे माता आपके पुत्र तो बहुत बडे है। मै तो उनके दास का दास हूँ पर माता उनकी कृपा से मै आकाश पाताल एक कर सकता हूँ इतनी शक्ति आपके पुत्र ने मुझे दिया है। भक्तिमाता कहने लगी जब कोई दुखी होता है तब अच्छी बात भी खराब लगती है। तुम जल्दी से मेरे लाल को मेरे पास लायो हनुमानजी ने माता तथा पिता का आशीर्वाद लिया और पवन की भांति जाते है। और उधर घनश्याम महाराज शयन से मुक्त होकर नेत्र खोले कि तुरन्त वह कृत्या जलने लगी और घनश्याम महाराज ने अपना वजन ब्रह्मांड जितना कर दिया कि तुरन्त कृत्याओ ने घनश्याम महाराज को आसमान से जमीन पर फेंक दिया उधर देवताओ ने सही वक्त समझकर फूल से सजाया हुआ पलंग लाये और आकाश मे पलंग पर घनश्यामजी विराजमान हो गये और सब देवता सेवा करने लगे इधर सभी कृत्याओं भाग कर जा रही थी कि तुरन्त हनुमानजी ने लपक कर सब कृत्या को पकडकर पूंछ मे बांध दिया और घुमाकर पटकने लगे जैसे धोबी कपडा धोता है उस प्रकार हनुमानजी ने कृत्याओं को धोया फिर तो सब कृत्या प्रार्थना करने लगी केशरीनंदन मुझे छोड दो आप तो ज्ञान और गुण के सागर है अब मुझे पता चल गया है कि यह बालक नही यह तो भगवान है इसीलिये आप इनकी सेवा करने के लिये स्वयं पधारे हैं दयालु अब हम छपिया में आने को सोच भी नही सकते है और फिर कष्ट निवारण हनुमानजी महाराज ने सबको मुक्त कर दिया वैसे भी भगवानके भक्त कभी किसी को परेशान नही करते और हनुमानजी के जैसा कोई दास भक्त इस दुनियामे नही है फिर हनुमानजी को

अनुसंधान पृष्ठ नंबर २१

सत्संगकी मर्यादा

- पटेल अमृतलाल हीरजीभाई (लखतर)

देवकी मर्यादा

(१) श्रीहरि ने अपनी गद्दी पर अपने ही पुत्रों को प्रतिष्ठित करके मूर्तियों की प्रतिष्ठा के लिए आज्ञा किया, जिससे उन प्रतिमाओं में प्रत्यक्षरुप से देव विराजमान हो सकें और आश्रितों का कल्याण हो सके। इस प्रकार के भाव में ही देव की मर्यादा हो सकती है।

(२) अंग पूजा करने वाले पुजारी को प्रत्यक्ष देव विराजमान है ऐसा भाव रखकर ही पूजा करनी चाहिए।

(३) परमेश्वर ने अपनी आज्ञा द्वारा ही स्वपूजा के लिए आठ प्रकार की मूर्तियों के पूजा का विधान बताया है। जिन में प्रत्यक्ष विराजमान रहने को भी कहा है। मूर्ति की पूजा जब भक्त करता है उस समय जैसे भगवान प्रत्यक्ष विराजमान हों ऐसी मर्यादा रखकर ही पूजा करनी चाहीए। वही मूर्ति संतो के हृदय में भी है, ऐसा समझकर संतो की भी पूजा करनी चाहिए।

(४) जो भगवान को अन्तर्यामी जानकर भी मर्यादा नहीं रखते उन्हे भगवान में निश्चय नहीं है, ऐसा समझना चाहिए।

(५) भगवान के सामने पीठ करके नहीं बैठना चाहिए। भगवान की मूर्ति के सामने से पदत्राण पहनकर नहीं जाना चाहिए।

(६) भगवान की मूर्ति के सामने पुष्पहार धारण करके नहीं जाना चाहिए।

(७) मल-मूत्र त्याग करने के बाद स्नानादि शौच होकर मंदिर में जाना चाहिए। किसी भी अशौच के बाद शुद्ध होकर ही भगवान के मंदिर में जाना चाहिए।

(८) कितने लोग तो भगवान के मंदिर में चप्पल जैसा मोजा पहनकर घूमते है। उस में भी भगवान का अपराध करते हैं।

(९) जब भगवान प्रसाद (भोग) जिम रहे हों तब प्रदक्षिणा नहीं फिरनी चाहिए।

(१०) अपने सप्रदाय के नियमानुसार भगवान को साष्टांग प्रणाम करने का विधान है - १. हाथ, २. पग, ३. ठेहुना, ४. छाती, ५. मस्तक, ६. मन, ७. वाणी, ८. दृष्टि।

(११) स्त्रियों को पंचांग से नमस्कार करने का विधान है। १. हाथ, २. मस्तक, ३. मन, ४. वाणी, ५. दृष्टि।

(१२) देव का दर्शन करते समय प्रत्येक अंगो का क्रमशः सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण करना चाहिए।

(१३) हरिभक्तों को जब वाहर गाँव जाना हो तब भगवान को साष्टांग प्रणाम करके जल का प्रसाद लगाकर पर्दा लगाकर फिर कहना चाहिए कि हे महाराज जब मैं बाहर जा रहा हूँ, आप भगवान नरनारायणेदव के साथ भोजन का प्रसाद ग्रहण करना।

शास्त्र की मर्यादा

(१) धर्मशास्त्रका वांचन करने से पूर्व शास्त्र का चरण स्पर्श करना चाहिए।

(२) शास्त्र को वांचते समय बीच में जाना हो तो शास्त्र को बंद करके यथास्थान रखकर ही जाना चाहिए।

(३) शास्त्रके पन्नो को मोडना नहीं चाहिए। मस्तक के नीचे तकिया नहीं बनाना, पत्र के नीचे कभी नहीं आने देना चाहिए।

(४) शास्त्रको बाहर लेजाना हो तो कपड़े में बांधकर ही लेजाना चाहिए।

(५) शास्त्र को खोलते समय थूक नहीं लगाना चाहिए। बीच में नहीं उठना, अध्याय पूर्ण होने पर उठना चाहिए।

(६) शास्त्र को ऊँचे आसन पर रखना चाहिए, पवित्र होकर ही स्पर्श करना क्योंकि शास्त्र भगवान के स्वरुप है।

तीर्थ स्थानों की मर्यादा

(१) कूँए से दूर स्नान करना चाहिए। जिससे स्नान का पानी कूएँ में न जाय।

(२) नदी या तालाब में मुख का कुल्ला नहीं करना चाहिए मल-मूत्र, पत्थर आदि नहीं डालना चाहिए।

(३) नदी तालाब से १२५ फुट दूर ही मल-मूत्रादि का त्याग करना चाहिए।

(४) तीर्थ स्थानों में पाप धोने के लिए जाते है, इसलिए हो सके तो सफाई करना चाहिए लेकिन गंदगी तो कभी नहीं करनी चाहिए।

(५) तीर्थ स्थान में मन को पवित्र रखना चाहिए, भगवान में चित्त को लगाना, संत समागम करना, तीर्थ स्थान की अव्यवस्था में चित्त को नहीं लगाना, मुख्य हेतु दर्शन ही होना चाहिए। भगवान के स्वरुप में मन को लगाना चाहिए।

(६) विधि के अनुसार जब तीर्थयात्रा करे तभी उसे सम्पूर्ण फल मिलता है। जिस में पांच व्यक्तियों को फल नहीं मिलता - १. जिसमें श्रद्धा न हो, २. जो पापी हो, ३. नास्तिक हो, ४. शंकाशील हो, ५. जो कुतर्क स्वभाव वाला हो। जो पुरुष काम-क्रोध-लोभ-मोह को जीतकर यात्रा करता है वही सम्पूर्ण फल को प्राप्त करता है।

(७) हे स्वामिनारायण भगवान के प्रिय भक्तजन ? तीर्थ में जाकर उपवास

करना, मुंडन कराना, सपिंड श्राद्ध करना, शक्तिके अनुसार दान देना, परमात्मा का नाम संकीर्तन करना, सत्संग करना, कथावार्ता सुनना इन प्रकार के सत्कर्म से हजार गुना अधिक फल मिलता है, पुण्य में बृद्धि होती है। इस के अलावा तीर्थ में किया गया पाप भी कई गुना अधिक होकर बढता है। घर में किया गया पाप तीर्थ में नष्ट होता है। तीर्थ में किया हुआ पाप वज्रलेप होजाता है। इसका कोई प्रायश्चित्त नहीं होता।

(८) जिस मनुष्य के पास पैसा होते हुए भी तीर्थ मे जाकर दान पुण्य नहीं करता, जो दूसरे की गुह्यवात करता है, निर्दयी है, अति लोभी है, दंभी है, विषय लोलुप है, ऐसे पुरुष तीर्थ में स्नान करने पर भी मलिन ही होते हैं। शरीर के धोने से कोई पवित्र नहींहोता, लेकिन मन के मैल को धोने से ही पवित्रता होती है। इसलिये तीर्थ में मन को वश में करके रखना चाहिए।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी मर्यादा

(१) अपने आचार्य महाराजश्री के साथ कभी विवाद नहीं करना चाहिए। अपने सामर्थ्य के अनुसार तन-मन-धन वस्त्रादिक से आचार्य की पूजा करनी चाहिए। (शि.प.श्लोक ७१)

(२) अपने आचार्य को आते हुए सुनकर आदरपूर्वक उनके सामने चलकर स्वागत के लिए जाना चाहिए। आचार्य जब गाँव से वापस जाने लगें तो गाँव के बाहर तक जाना चाहिए। (शि.प. श्लो. ७२)

(३) अपने आचार्य के पास से तथा श्रीकृष्ण भगवान के मंदिर से उधार नहीं लेना और अपने व्यवहार के लिए वस्त्राभूषण पात्र-वस्तु भी मांग कर नहीं लाना। (शि.प.श्लो. १५०)

(४) आचार्य महाराजश्री के दर्शनार्थ जब जायें उस समय आचार्य महाराजश्री को मस्तक से पगड़ी-टोपी आदिक वस्तु उतारकर दंडवत् प्रणाम करना चाहिए।

(५) महाराजश्री जब सभा में आवें उस समय आदर पूर्वक खडे हो जाय जब वे बैठ जांय तभी बैठना चाहिए। जब सभा में से जाने लगे तब खड़ा होकर नमस्कार करना चाहिए।

(६) आचार्य महाराजश्री के दर्शनार्थ जब जांय उस समय कुछ भेंट अवश्य लेकर जाना चाहिए।

(७) उत्सव में जब आचार्य महाराजश्री चलकर जा रहे हों उस समय चरण स्पर्श के लिए भागदौड़ नहीं करना चाहिए। दूर से हाथ जोड़कर प्रणाम करना, दोनो तरफ हाथ जोडकर खडा होकर उन्हें मार्ग देना चाहिए, यह चरण स्पर्श से अधिक महत्व का है। आचार्य महाराजश्री तथा संतो के चरण स्पर्श के शिवाय अन्य अंग का स्पर्स नहीं करना चाहिए।

(८) पुरुष हरिभक्त आचार्य महाराजश्री के पास से गुरुमंत्र लेकर एकमाला अवश्य करें। महिलावर्ग गादी वाला से मंत्र लेकर उसी मंत्र की माला फेरे।

(९) लग्न आदि व्यक्तिगत व्यावहारिक कार्यक्रम में आचार्य महाराजश्री तथा संतो का आशीर्वाद लेने के लिये सामने जाना चाहिए, न कि उन्हें अपने घर बुलाने का आग्रह रखना चाहिए।

निहारो मूर्ति नरनारायण देवनी

"अहमदावाद ! नरनारायण देवनी मूर्ति निहारवा मळे,
प्रभु पधारावेल मूर्तिमां चरण मही, शिर झुकाववा मळे।

आवति आखिये उम्रनी, भुलववा माटे,
"श्री स्वामिनारायण म्युझियम" निर्माण निहारवा मळे।

दृष्टि पूज्य आचार्यश्रीनी पडे छे अहीं अमी भरी,
घेरा जखमो जीवन तणा सहु रुझाववा मळे।

अरे ! मंदिर- मही आरती नी ज्योत झलहळी।
अनायासे थोडी क्षणो मंदिर - मध्ये वितावा मळे।

थोडीवार थाळ आवे, पडदो आवे तो जाय चालतो रहे,
आँखो खुले तो, नयनरम्य नरनारायण देव निहारवा मळे।

हे श्रीजी ! नसीब अमारा के बाथमां लई मूर्ति पधरावी।
अरे ! आनंद मां अंगडुकोने जीवन गुजारवा मले।

जो एकबार दर्शननो अलभ्य लाभ मळे।
तो मूर्ति ना सुखे सुखी जीवन वितावा मळे,

हे हरि ! अमारा अहोभाग्य के भव्य मूर्ति मळी,
खरेखर अनुयायिओना जीवननी आ यात्रा फळी"

प्रो. महादेव (धोरीयाणी)

मूर्तिको मन में धारण किये बिना कारण शरीर की वासना नष्ट नहीं होती

• जंयतीभाई के सोनी (अहमदावाद)

देहाभिमान छोडे बिना मूर्ति हृदय में उतर नही शकती । दुनियां का राज्य हो या कितना बडा क्यों न हो तो भी उसे काल एक क्षण में ग्रस लेता है । अंतमें कोई रहनेवाला नही होता है । भगवान के सिवाय सुख देनेवाला कोई नहीं है । करोडो जन्म स्त्री के लिये, धन के लिये, तथा अपनी प्रतिष्ठा के लिये, व्यवहार के लिये अपने समय को लोग बिताते है । तो भगवान के लिये क्या कुछ नही किया जा सकता ? इसलिये भगवानकी प्राप्ति के लिये आज से ही मन को उसी में लिप्त कर देना चाहिए । अब हमें स्वामिनारायण भगवान मिले है । सर्वोपरि द्वारा स्थापित मर्यादाओ में हमे प. पू. आचार्य महाराजश्री गुरु के रुप में मिले है, जिन्हे महाराज ने स्वयं प्रतिष्ठित किया है । इन्ही की आज्ञा में रहनेवाले संत-भक्तो का योग हुआ है । अब भगवान की प्राप्ति का यही उपाय मानकर सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए । इसलिये सतत मननशील होकर अखंड ध्यान करना चाहिए । अन्यथा मायाका यह संसार भगवान की भक्ति की तरफ जाने में संपूर्ण बाधक बनेगा, जिससे कल्याण का मार्ग रुध जायेगा ।

एक समय श्रीजी महाराज दादाखाचर की दालान में भोजन के लिये बैठे हुए थे, भोजन के बाद मुखवास खाते हुए नारायण के दालान में जाकर उच्चआसन पर उतराभिमुख मुखारविंद करके बैठे थे । उस समय नृसिंहानंद स्वामी इत्यादि संत बैठे थे, सभी महाराज के दर्शन का आनंद ले रहे थे । उसी समय नृसिंहानंद स्वामीने श्री हरि से कहा कि प्रभु संसारी लोगों को आपके दर्शन का सुख सदा मिलना संम्भव है ? तब महाराज ने कहां जीव में तीन गुण है - सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण, यह जब जीव के पास आता है तब उसके विचारो को बदलदेता है और मूर्ति का सुख तब नही मिलपाता । वह कारण शरीर कैसी है तो वह किसी प्रकार उसे दूर करना संभव नही है । करोडो ब्रह्म हत्या की तरह है । इसीलिये सुख आने नही देता है । इस बात को समझाते हुए श्रीजी महाराज ने कहा जैसे इन्द्र को ब्रह्म हत्या लगी थी, जिससे उन्हे मानसिक शांति कहीं मिल रही नही थी उनकी शरीर सूख गयी । उसी समय नारदजी मिले उनसे पूछा कि अरे इन्द्र देव ?आप इतने दुर्बल क्यो है ? तब इन्द्रने बताया कि मुझे जो दुख है ऐसा दुख कोई नही है । नारदजी ने कहा कि तुम अपने दु:ख का कारण बताओ, तब इन्द्र ने अपनी ब्रह्महत्या की बात बताई, सुनकर नारदजीने कहां जैसे मै बताउ वैसा आप करो । अपने छोटे भाई का हृदय में ध्यान करो । सुनकर इन्द्र हँसने लगे । नारदजीने कहां कि मैने कहा था कि तुम नही मानोगे इन्द्र ने कहा आप यदि किसी बडे देव कि बात किये होते तो ठीक यह तो बालक है । उसे कोई खबर नही तो क्या वह मेरी ब्रह्महत्या को दूर कर सकता है ? यह सुनकर नारदजी वहां से चल दिये । उस समस ब्रह्महत्या इन्द्र की छाती पर आकर बैठ गयी । तब इन्द्र को स्मरण हुआ कि मैने नारदजी का बचन नहीं माना, उसीका यह परिणाम है । तुरंतही अपने छोटे भाई जो बालरुप है उन्ही का स्मरण करने लगे । उसी समय ब्रह्महत्या दूर हो गई और वामन भगवान को अपने चित्त में सदा के लिये धारण किये । यह देखकर इन्द्र ने विचार किया कि नारदजीने कहा था कि इसी मूर्ति को हदय में धारण करना इसी से ब्रह्महत्या का नाश हो गया ।

इसी प्रकार जीव जव अखंड मूर्ति का स्मरण करता रहेगा तो कारण शरीर का अपने आप नाश हो जायेगा । इसवे अलावां अन्य कोई दूसरी उपाय नही है । यदि नित्य सुख की चाहना हो तो मूर्ति को अपने हृदय में सदा केधारण करो । तभी उसमें परमात्मा का सदा के लिये निवास होना संभव है । भगवान स्वामिनारायण ने भी यही स्पष्टता की है हमारे सभी भक्त भगवान नरनारायण देव की मूर्ति को प्रत्यक्ष मानकर सदा उसी का ध्यान करते रहे । गढडा प्रथम प्रकरण वचनामृत में स्वयं श्री हरि ने कहा है कि भगवान की मूर्ति चिंतामणी के समान है । मनकी अंखड वृत्ति यदि भगवान में रहेगी तो जीव, माया, ब्रह्म, इन सभीको वह तत्काल देख शकता है। इसके साथ वैकुंठ, गोलोकधाम, ब्रह्मलोक, इत्यादि जो भी भगवान वे धाम है, उसका भी वह दर्शन कर सकता है । इतनी बड़ी प्राप्ति किसी अन्य साधन से सम्भव नहीं है । यह सभी मूर्ति वे प्रताप से प्राप्त हो सकता है । इसीलिये सदा मूर्ति के ध्यान से कल्याण हो सकता है, अन्य तो बन्धन कर्ता ही है ।

ब्रहतेज का स्फुलिंग (प्रभाव)

चन्द्रकान्त मोहनलाल पाठक (गांधीनगर)

भगवान का भक्त हो तो वह धाम में जाकर पुनः वापस नहीं आता है। ऐसा गीता में कहा गया है, लेकिन जो वहां जाकर वापस आते हैं वे क्यों आते होंगे? ऐसा प्रश्न स्वयं प्रकाशानन्द स्वामी ने श्रीहरि से किया था। इसी के साथ इसीका उदाहरण भी दिया कि- वैकुंठ में से जय विजय गिरे थे। गोलोकधाम से राधिकाजी तथा श्री दामाजी गिरे तो इसे क्या कहां जाय?

जय-विजय तो तीसरे जन्म में भगवान के धाम को प्राप्त किये। इसीलिये इन्हे गिरा नही कहा जा सकता है। यह भगवान की इच्छा से हुआ था। राधिकाजी भी गिरी तो भगवान की इच्छा से कारण कि स्वयं मनुष्यदेह धारण करनेवाले थे। गिरा हुआ तो वह कहा जाता है जिसे बाद में भगवान का संबन्ध नही होता है। इस प्रकार श्रीजी महाराज ने उत्तर देकर समझाया था।

इस प्रकार की बात बचनामृत में आती है। जय-विजय कौन थे? भगवान के धाम में से क्यों गिरे? किस लिए जन्म धारण किये? किस लिये असुरज्ञाति में जाना पडा? किस लिये भगवान के साथ युद्ध करना पड़ा? सनकादिक मूर्तियो ने उन्हे क्यों श्राप दिया? ये सभी प्रसंग रसप्रद है। जानने योग्य है। यह प्रसंग उपस्थित होने में भगवान की इच्छा ही कारण है।

सनकादिक शब्द व्यक्ति समूह के लिये प्रयोग किया गया है। ब्रह्माजी जब सृष्टि किये उस समय सर्वप्रथम अज्ञान, मिथ्याज्ञान, भेद, शोक, इत्यादि मनोभावो को पैदा किये। योगदर्पण में अविद्या, अश्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश, (तन्मयता) संगति इस प्रकार पांच प्रवृत्तियो का सर्जन किया। ये प्रवृत्तियां सात्विक सृष्टि के सर्जन में उपयोगी नहीं होगी इस प्रकार विश्व सृष्टि को अपना ही अंग मानकर भगवान के ध्यान से मानसिक शक्ति द्वारा चार कुमारो को आज्ञा की कि हे पुत्र! आप लोग सृष्टि का कार्य करो। वे सभी तो महान ज्ञाती थे, इसीलिये धर्म, भक्ति, एंव मोक्ष तत्व के अनुरागवाले होने से पिताकी आज्ञा नही माने, और यह कहकर कि हमें तो वैकुंठपति की आराधना करनी है। इस आज्ञाकी अवगणना से विधाता केशरीर में क्रोध व्याप्त हो गया। क्रोध को रोक नही शवे परिणाम स्वरुप उनकी भृकुटि से एक पुत्र पैदा हुआ। उसे तथा शिवजी को प्रजा उत्पन्न करने की आज्ञा की, लेकिन शिवजी अपने स्वभाव के अनुसार भूत-प्रेत-पिशाच ऐसी भयानक सृष्टि करने लगे, इससे ब्रह्मा नाराज हो गये, और पुत्र से कहां कि बेटा! ऐसी प्रजा की हमें अपेक्षा नही थी। ऐसी प्रजा तो भविष्य में सृष्टि का नाश ही करेगी। अभी इस कार्य को बंद करो। प्रजा के सुख हेतु तुम तप करो। इस तप से आप प्रजा को सुखी कर सकते हो। इस प्रकार ब्रह्माजी के पांचो पुत्र सृष्टि सर्जन में उपयोगी नहीं हुए।

एक समय भगवान लक्ष्मीनारायण सुखासन पर विराजमान थे। समीप में लक्ष्मीजी विराजमान थी। भगवान ने कहां, हे देवि! इस समय मुझे युद्ध करने का मन हो रहा है।

युद्ध करने का?

हां, किसी बलवान के साथ युद्ध करना है।

युद्ध करने का कोई प्रयोजन?

प्रयोजन कोई नही, केवल लड़ने की इच्छा हो रही है।

धन्य है आपकी इच्छा को! किसके साथ युद्ध करेंगे?

यही विचार कर रहा हूँ। कोई मेरे जैसा बलवान हो उसके साथ!

भगवान की नजर जय-विजय पर पड़ी। जय-विजय भगवान के महल के द्वारपाल थे। दोनो भगवान के परमभक्त थे। इसी लिये उन्हे सेवा में रखे थे। लक्ष्मीपतिने विचार किया कि मेरे द्वारपाल सशक्त है। अस्त्र शस्त्र के जानकार है। इनके साथ युद्ध किया जा सकता है। लेकिन मेरे साथ ये युद्ध करने को तैयार होंगे नहीं। कारण यह कि मै इनका इष्टदेव हूँ। स्वामी हूँ। मुझे इन्ही के साथ युद्ध करना है। प्रभु मन ही मन योजना की तैयारी करलिये।

एक दिन सनकादिक कुमारो को प्रभु दर्शन की इच्छा हुई। श्री हरि का स्मरण करते हुए चारो कुमार आकाशमार्ग से वैकुंठधाम पहुँच गये। अपने परम आराध्य परमपिता परमेश्वर के दर्शन में एक मात्र चित्तवाले ऐसे ब्रह्मनिष्ठ जो पांच वर्ष की अवस्थावाले है, उन्हे जय-विजय भीतर जाने से रोक दिये। क्योकि वे सदैव पांच वर्ष के रहते है और नग्न अवस्था में थे।

जय-विजय को लगा कि हमारी उपस्थिति में मेरी अवगणना करकेजाने वाले ये कोन है? प्रभु के धाम में प्रभु के पास जाने वाले कौन हो सकते है? फिरभी आप पूछते हो तो निश्चित कोई शंका है? समदृष्टिवाले देवताओ केबीच में विषमदृष्टिवाले आपलोग लगते है। इस प्रकार बडी कडकाई के साथ बोले।

वस्त्र विहीन दशामें प्रभुके पास आने की उद्धताई करनेवाले से पूछना पड़ेगा। यह हमारी फर्ज है, मै द्वारपाल हुँ।

निरावण दृष्टिवाले को आवरण कैसा? भगवान के दर्शन की उत्कंठावाले सनकादियों ने कहा। अगल - बगल से आने जानेवाले देवताओ के सामने यह शब्द व्यवहार हो रहा था। सनकादिकों को क्रोध आगया और जय-विजय को श्राप दिया कि तुम्हारा पतन हो। असुर स्वभाव को प्राप्त करो। काम-क्रोध-लोभ का जहां शासन हो वहां भटको।

जय-विजय तो ढीळे पड गये। उन्हे लगा कि कुछ अनिष्ट हो गया है। ये कोई समर्थ पुरुष लगते है। मैने इनका अपराध किया है ऐसा समझकर अपराध का क्षमा मांग रहे थे। हे कुमारो! आपको मै पहचान नही पाया, जिससे मेरे मुख से ऐसे वचन निकले है, यह हमारी भूल है।

सर्वज्ञ महाप्रभु लक्ष्मीजी से कहते है, देखो देबी सायद द्वार पर कोई अघिटत घटना हो गई है- कोलाहल हो रहा है देवता लोग एकत्रित हो गये है, चलो हम देखते है। भगवान पग में पादुका भी नहीं पहने नंगे पांव चल दिये। लक्ष्मीजी भी पीछे पीछे चलती रही। द्वार पर पहुचते ही महाप्रभु का जब सनकादिको को दर्शन हुआ तो उनका तन प्रफुल्लित हो गया। चरणस्पर्श करके कहे कि हे प्रभु! आपका दर्शन करके हम कृतार्थ हुए है। आपकी महिमा हमारे पिताने खूब समझाया है। उसी समय से आपके दर्शन की लालसा हमारे मन में थी। जिसका लाभ आज मिला। आज आनंद की अनुभूति हो रही है। परंतु अभी एक घटना घट गयी इसका हमें दुःख है। आपके द्वारपाल दरवाजा में प्रवेश करने से रोके। अयोग्य शब्द बोले। हम आपके दर्शन में विलंब देखकर सहन नही कर शके। जिससे क्रोधमें आकर शाप दे दिये। यह जो हुआ वह कह दिया।

विष्णु भगवान ने मुनियो का अभिवादन किया। और कहां कि हमारे पार्शद आपकी अवगणना किये, इसका उन्हे फल मिलना ही चाहिये। इन्होने आपका नहीं हमारा अपराध किया है। जिस परमात्मा के चरणोदक को देव-ऋषि सभी धारण करते है आज आप सभी के चरणोदक को मस्तक पर हम धारण करते है। मेरे हाथ यदि, आपका आपराध करे तो अपने हाथ को भी मै काट डालूं। मेरे पार्शद मेरे स्वभाव से अभिज्ञ हो तो ही यह होना सम्भव है। इसीलिये मै आप सभी का क्षमा मागता हूँ। आपने इन्हे जो दंड दिया है वह योग्य है। इसे मै मान्य रखता हूँ। भले असुर योनी में जन्म ले, लेकिन इतना अनुग्रह अवश्य करना कि जल्दी मेरी सेवा में वापस आसके।

मधुरवाणी से भगवान ने सनकादिको को अपने अनुकूल बना दिया। अभिनन्दन करते हुए सनकादियो ने कहा हे वैकुंठाधिपति जगत के ऊपर आपकी ही सर्वोपरिता है। आप ही देव मनुष्य सभी प्राणियो के नियामक हैं, उन्ही के पालक है, रक्षक है। आधार है। हम आपको प्रणाम करते है। आपने जो हम से क्षमायाचना की बात की है वह तो आपका विनोद है। आपकी महानता है। दोषी तो हम भी है। जय-विजय को जो हमने श्राप दिया है, उसे यदि कम करना है तो ठीक है, इसके साथ हमें भी जो उचित शिक्षा देनी हो दीजिये। आप सभी के नियामक है। स्वतंत्र है। आपसे महान कोई नहीं है।

भगवान ने कहा कि हे कुमारो! मै चाहता हूँ कि आपने जो जय-विजय को श्राप दिया वह सत्य हो। दोनो पार्शद आसुरप्रवृति को धारण करें। परंतु थोडे समय के बाद पुनः मेरे धाम में आवें। आपने जो श्राप दिया वह मेरी प्रेरणा थी। आप दोष रहित है। हम आप के ऊपर प्रशन्न है। ऐसा भाव देखकर भगवान को प्रणाम करके सनकादिक अपने निवास स्थान को चल दिये।

बाद में भगवान ने जय-विजय को देखा। दोनो के चेहरे पर उदासीनता थी। विषाद आंखो से झलक रहा था। मस्तक नीचे लटका के खडे रहे। लक्ष्मीपति ने कहा हे द्वारपालो! आप लोग दुःख मत लगाना। कोई डर की बात नहीं है। आपका कल्याण हो। अभी जो अघटित घटना हुई है वह हमारी इच्छा से हुई है। सनकादिक के श्राप को दूर कर सकता हूँ। परंतु ब्रह्म तेज को कम करना नही चाहता हूँ। एकबार जब मै योग निद्रा में था उस समय लक्ष्मीजी को भी आप लोग रोके थे तो लक्ष्मीजी ने भी श्राप दिया था, अतः अब आप दोनो श्राप के कारण राक्षस बनो और हमारे शत्रु बनने से भी मुझ में भक्ति बनी रहेगी। थोड़े ही समय में श्राप से मुक्त होकर मेरे धाम में आयेंगे।

देखते देखते जय-विजय तेज हीन हो गये। देवत्व खत्म हो गया। वहां से प्रस्थान किये। उदर में जन्म लिये। देवताओ को था कि ऐसा क्यो हुआ।

यह तभी सम्भव है जब ब्रह्मतेज का तिरस्कार हो। पुराण की कथा में ऐसा आता है कि जय-विजय पूर्व जन्म में जय-विजय नाम के दोनो भाई थे। इन दोनो के ऊपर भगवान बहुत प्रशन्न हुए और उन्हे अपने धाम में द्वारपाल बनाये।

हमारा नरनारायणदेव के साथ सीधा सम्बन्ध है

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट

इस मायावी संसार से मुक्त होने के लिए भगवान की मूर्ति का ध्यान करना तथा धातु के पाषाण की मूर्ति या चित्र प्रतिमा जो भी हो उसमें मूर्ति का भाव न लाकर प्रत्यक्ष हरि का स्वरुप मानना चाहिए, ऐसा स्वयं अपने मुख से श्रीहरिने कहा है । इस समय संत इसी भाव पर बल देकर समझाते हैं कि जब तक भक्त के मन में चित्र प्रतिमा या मूर्ति में साक्षात् भगवान स्वयं उपस्थित हैं ऐसा भाव नहीं आयेगा तब तक मुक्ति मिलना कठिन है । परंतु जब मूर्तिभाव टल जाय तब मनुष्य मुक्त हो जाता है । मनुष्य निजानन्द में डूब जाता है । लेकिन जगत के विषयराग से मन को हटाना होगा तभी यह संभव है । भगवान को प्राप्त करना तभी संभव है जब उसमें से पंच विषय हटे और मूर्ति में साक्षात् भगवान का दर्शन होने लगे ।

गढडा प्रथम प्रकरण के ४८ वें वचनामृत में श्रीजी महाराज ने आठ प्रकार का प्रमाण बताया है । सावधान होकर इस वात को सुनने की आज्ञा की और संत हरिभक्तों को श्री नरनारायणदेव की मूर्ति को पूजा में रखने की भी आज्ञा की । आठ प्रकार की मूर्ति जो भागवत में कही गयी है, उसी की पूजा करना । यही हमारी आज्ञा है । इसलिए प्रत्येक हरिभक्त प्रातः उठकर स्नानादि करके श्री नरनारायणदेव की पूजा करें । पूजा करके प्रदिक्षिणा करें एवं साष्टांग प्राणाम करें । बाद में भगवान से मांगना चाहिए कि हे प्रभु ! हमारी कुंसग से रक्षा कीजिएगा । कुसंग चार प्रकार का है । १. कुंडा पंथी, २. शक्ति पंथी, ३. वेदांती, ४. नास्तिक इस लिए यदि कुडापंथी का संग होतो पतित करेगा । शक्तिपंथी का संग हो तो दारु व्यसनादि से भ्रष्ट करेगा । वेदांती का संग हो तो मूर्तियों का खंडन करेगा, नास्तिक का संग होतो कर्म को यथार्थ बता कर ईश्वर को गलत बताकर भ्रष्ट करेगा । इन सभी कुसंगियों से दूर होने के लिए एक मात्र भगवान नरनारायणदेव का स्तवन करते रहना चाहिए ।

श्रीजी महाराज ने अपने स्वरुप के विषय में बताते हुए कहा है कि हमारा दिव्य ऐश्वर्य तथा सामर्थ्य जीव के आत्यंतिक कल्याण के लिए है । सरलमार्ग बताते हुए कहा है कि हरिभक्त लोग हमारी आज्ञा में रहकर नरनारायणदेव की पूजा करेंगे, हमारे और नरनारायणदेव में सीधा संबन्ध है । जो पंचवर्तमान पालते है, उन्हे हम नरनारायणदेव की मूर्ति के माध्यम से अखंड सुखिया करते हैं । इसलिए आप सभी यह निश्चय करके भगवान नरनारायण देव की मूर्ति को अपूज्य कभी नहीं रखना । जब तक पूजा करते रहेंगे तब तक नरनारायण देव विराजमान रहेंगे यही हमारी आज्ञा है ।

इस प्रकार श्रीजी महाराज ने इस भव रोग से पार होने के लिए उपासना का सरल मार्ग बताया है । किसी भी अवतार में ऐसी वात का उल्लेख नहीं है । परंतु श्रीजी महाराज तो सर्व अवतारी है । भगवान की व्यापकता एवं प्रत्यक्षत्व स्पष्ट होता है । उनके साथ जिनका आत्मीय सम्बन्ध हो जाय तो निश्चय ही वह जीव मोक्षभागी बनजाता है ।

श्रीहरि की आज्ञा का पालन आज जिस तरह से हो रहा है, प्रायः इसी में सभी का हित निश्चित भी है । आज भी संत उसी आज्ञा को कोशिरोधार्य करके चित्रप्रतिमाओं का दर्शन करके आनंद विभोर हो जाते हैं । समाधिस्थ हो जाते हैं । ऐसे संतो की दृष्टि एवं शरीर निरावरण हो जाती है । वे भक्तों को ज्ञान देते रहते हैं कि पूजा के समय मन को मूर्ति में लगादेना चाहिए । यदि पूजा के समय वाद-विवाद होता है तो श्रीहरि का अपमान ही है । श्रद्धान्वित होकर श्रीजी महाराज द्वारा बताये गये मार्ग पर यदि चलते रहेंगे तो यह जीवन तो सुखिया होगा ही परलोक भी सुधर जायेगा । इसलिए आज्ञानुसार चित्र प्रतिमा में पाषाणादिक भाव न लाकर भगवान का प्रत्यक्ष स्वरुप है ऐसा मानने से अक्षरधाम का अखंड सुख प्राप्त होगा ।

आगामी उत्सव

श्रावण वद-८ ता. १६-८-०६ श्री कृष्ण जन्माष्टमी मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के सांनिध्य में तथा प.पू.ध.धु. बडे आचार्य महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में उत्सव धूमधाम से संपन्न किया जायेगा ।

भाद्र शुक्ल-११ सोमवार ता. ४-९-०६ जलझीलणी एकादशी श्री गणपतिजी का उत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में अहमदाबाद मंदिर में धूमधाम से सम्पन्न होगा । जेतलपुर, मूली, भुज, वडताल, गढपुर आदि मंदिर में भी धूमधाम से मनाया जायेगा ।

सत्संग सुरभि :

दूसरे कौन इतने समर्थ देव

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

गाँव गाँव धूमकर नित्यानंद, मुक्तानंद, स्वरुपानंद इत्यादी संत अनपे मंडल के साथ महाराज के सामने आकर बैठे। महाराजने पूछा कि तने लोगों को सत्संग करवाया ? संसार में मनुष्य कैसे लगे ?''

उस समय स्वरुपानंद स्वामी बोल उठे माहाराज। देश-देशान्तर में बुहत धूमे लेकिन महाराज तो एक ही दिखाई दिये।

महाराजने भविष्य में दुष्काल होगा यह ध्यान में रखकर हरिभक्तों के योगक्षेत्र के लिये नित्यानंद मुनि से भागवत की कथा करवाई। कथा पूर्ण होने के बाद सभी ने रुद्राक्ष बंधवाया।

वहाँ से महाराज संत मंडल के साथ सारंगपुर गये। सारंगपुर में गाँव गाँव के हरिभक्तं को बुलवाकर फूल दोलोत्सव करवाने का निश्चय किया।

फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा का दिन था। मंद-मंद पवन बह रहा था। सोलह कला से चन्द्रमां खिला हुआ था। उस रात्रि में महाराज गाँव के बाहर होलिकादहन किये। गाँव गाँव से संत-हरिभक्त आये हुए थे। महाराज ने होली में दूध की धारा बहाई। पाँच प्रदक्षिणा किये, पूजन किये बाद में नारियल का होम किये।

बाद में माणकी घोडी पर बैठकर वहाँ आये हुए सभी संत हरिभक्तों को उपदेश दिये की ''आज से सभी लोग यह नियम लेकि होली के दिन अपशब्द नहीं बोलगे, विभत्स व्यवहार नहीं करेंगे, मुक्तानंद प्रेमानंद, ब्रह्मानंद के बनाये ही गीत गायेंगे।

इस प्रकार सुन्दर उपदेश देकर गाँव में वापस आते समय मुक्तानंद, प्रेमानंद इत्यादि संतो को होली सम्बन्धित उत्तम पद रचने के लिए आज्ञा कर दिये। अंत:शत्रुओं को पराजित करने वाले होली के पद रचे गये। इस प्रकार धर्म को समाज के साथ जोड़कर कुरीतियों तथा दूषणों को हटाया। इसके साथ अच्छी प्रथा (रीवाज) को चलाया। अनंतकोटि ब्रह्मांड के अधिपति स्वयं परमात्मा इस प्रकार के सामाजिक व्यवहार में घुसे कि सभी अंतर में वस गये, परिणामत, मनोहर मूर्ति सभी के हृदय में सदा के लिए बिराजमान हो गयी।

महाराजने धर्म, नीति तथा भक्ति को सभी के जीवन में भर दिया।

धुलहटी के दिन महाराज अपने मित्रों के साथ खेले। सभी के वस्त्रपर गुलाल छिड़के। सभी को रंग से तरबोर कर दिया। महाराज जब देने वाले हों तो क्या शेष ? चाहे वह रंग हो या संग ! एक बार महाराज केवल निश्चित करले वस।

''जेराम कहे स्वामी सहजे रे मणिया वातनी
वाते बहालो अढडक ढण्या।''

इसके बाद नारायणघाट नहाने पधारे। महाराज तथा संत स्नान किये, नारायणघाट का जलभी अमृत हो गया।

स्नान करके वापस आ रहे थे उस समय गढड़ा से गुणातीतानंद स्वामी तथा निष्कुलानंद स्वामी महाराज का चरण स्पर्श किये। महाराज ने पूछा क्यों संतो ! हमारे लिये क्यां भेट लाये हैं। यह कहकर संतो का पुष्पहार स्वीकार किया।

इसी अवसर पर उत्तर गुजरात से दर्शनार्थ कुछ महिला हरिभक्तों ने महाराज के सामने बडी नम्रता के साथ फाग के गीत गाये।

''महा बलवंत माया तारी
जेणे आवरिया नरनारी।
एवं वरदान दीजिये आप,
एहमाया अमने न व्यापे।
..... बंधाईवे।

हे महाराज ! हम लोगों को कभी काम-क्रोध व्याप्त न हो, आपका निर्दोष स्वरुप मात्र हृदय में विराजे, किसी का दोष अवगुण जीवनमें न आवे।

महिला भक्ताओं की इस प्रकार अद्‌भूत मांग को सुनकर महाराज बहुत प्रसन्न हुए। महाराज ने कहा अब आज से आप सभी मेरी माया में फंसे भी नही, मेरे निर्दोष स्वरुप का सदा ध्यान बना रहेगा। आप सभी को काल, माया, क्रोद इत्यादि व्याप्त नहीं होगा। किसी काल में भी मेरी मूर्ति को भूल नहीं सकती।

कितनी सुन्दर मांग है, इस प्रकार की याचना पर श्याम सुन्दर खूब प्रसन्न हुए। महाराज प्रसन्न होकर ऐसे फाग का आशीर्वाद दिये।

दीधा दास ने फगवा एवा,
बीजुं कोण समर्थ एवुं देवा।
एम रम्यां रंगभर होली,
हरि साथे हरिजन टोली।

सत्संग बालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

कलियुग के योगी

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

कौन कहता है कि कलियुग में योगी पुरुष जन्म नहीं लेते ? अंबरीष, जनक, ध्रुव जैसे आध्यात्मिक पुरुषों की परंपरा में नाम लिखा जाय ऐसे भक्त भगवान स्वामिनारायण का आश्रय लेकर संसार सागर में जीते रहे फिर भी संसार में डूबे नहीं और डूबेंगे नहीं यह ठाकुरजी का वचन है।

"संसार मां सरसो रहे,
मन मारी पास ।
संसार जेने लोपे नहीं,
तेने जाणुं मारो दास ॥
संसार जेने लोपे नही,
तेने जाणुं मारो दास ॥

वात है नैनपुर गाँव के देवजीभाई की । श्रीजी महाराज के समय की बात है । कुटुंब में तीन पुत्र । खेती करके जीवन की नैया चलती थी । कौन जाने क्या हुआ कि थोडी ही बिमारी में वह पुत्र अक्षरनिवासी हो गया । अग्नि संस्कारादिक विधि पूर्ण करके देवजीभाई तथा उनकी पत्नी दोनो बैठकर विचार कर रहे थे। अब क्या करें? इसकी सभी को जानकारी होगी सगे संबन्धि सभी आंयेगे, अन्य भी आयेंगे । रोना पीटना प्रारंभ कर देंगे और भगवान को भुलवा देंगे। जो कुछ हुआ है वह भगवान की इच्छा से हुआ है। अपना पुत्र हमारे साथ अठारह वर्ष तक ही रहने वाला था। उसे जाना था इसलिए वह चला गया। स्वामिनारायण भगवान उसे ले गये। पत्नी ने कहा यही सत्य है। अपना वेटा कितना भाग्यशाली है । अक्षरधाम में जाने के लिए कितनी भजन करते हैं, वह भी भजन भक्ति करता था। भगवान के पास हमसे पहले पहुंच गया। पुत्र-मृत्यु के बाद दम्पति को ऐसा विचार आता है क्या ? पति पत्नी का कितना बडा धैर्य ! कितनी इनकी विचार शक्ति !

दोनो विचार करते है कि संसार के इन रिवाजो से बचने की क्या उपाय हैं ? देवजीभाई की पत्नी कहती हैं कि अपना खेत गाँव से बहुत दूर है । किसी को बताने की जरुरत नहीं हैं। आप यहीं रहना हम यहाँ से महाराज के पास गढडा चली जाऊँगी। वहाँ सांख्ययोगी बहनों के साथ रहूँगी । एकाध महीने के बाद आप भी आ जाना । एकदो महीने बाद हम दोनो यहाँ वापस आयेंगे। तब तक सभी भूल जायेंगे ।

सही बात तो अब आ रही है । देवजीभाई की पत्नी गढपुर पहुंची। निंब वृक्ष के नीचे सभा चल रही थी । ऐसा नयन रम्य वातावरण था। स्वामिनारायण भगवान निंब वृक्ष के नीचे बेदिका पर विराजमान थे । एक तरफ संत, दूसरी तरफ हरिभक्त, दरबार की दालान में बहने बैंठी थी। वे बहने आकर नमस्कार कीं। भगवान अन्तर्यामी थे, सब कुछ जानते हैं तो भी, सभी को यह ख्याल आवे कि यह बहन कौन है ? इतना ही नहीं, इस की क्या स्थिति हैं ? इसी हेतु से महाराज ने बहन से पूछा कि "हमारे भक्तराज सुखी है न ?" इस समय कोई साधारण स्त्री होती तो पुक्का छोड़कर रोने लगती। लेकिन उस बहन ने कहा "हाँ महाराज ! भक्त तो सुखी थे ही अब और सुखिया हो गये । सभी को हुआ कि ऐसा क्या हुआ कि जो अधिक सुखी हो गये हैं। सभा में किसी को ख्याल नहीं आया। सभा में सभी को जानने के लिए महाराज स्पष्टता करवाये कि अधिक सुखी हो गये इसका क्या मतलब ?

महाराज ! आप का दिया हुआ एक ही पुत्र था वह अठारह वर्ष का था, आपके भक्त को इसकी चिन्ता होने लगी थी कि अब इस के लिए कोई कन्या ढूढनी पडेगी। ऐसा कोई जीव आये तो भगवान की भक्ति में वृद्धि करें। इसी की चिंता हरदम रहती थी । महाराज ! आपने इस चिन्ता से मुक्त कर दिया । इसीलिये मैने कहा कि आप के भक्त अब और सुखी हो गये हैं। श्रीजी महाराज कहते हैं कि बहन आप और स्पष्ट करें कि "भक्त किस प्रकार चिन्तामुक्त हो गये" ? महाराज ! अठारह वर्ष के बेटे को आप अपने धाम में ले गये, उसके लिए जो चिन्ता थी वह चली गयी ।

अब स्वामिनारायण भगवानने सभाजनों को बाताया कि आप लोग भी गृहस्थ है, हमारे ए देवजी भक्त भी गृहस्थ हैं। इनका एक ही बेटा था, जो धाम में चला गया, जिस के लिए भक्त पत्नी कहती है कि आपके धाम में चला गया, बस भगवान की इच्छा । जिस का परिणय संस्कार करना था । सभी चिंता से मुक्त हो गये । केवल अब भगवान की भजन शांति से होगी ।

पुत्र भगवान के धाम में गया । हमें भी धाम में जाना है। वह भाग्यशाली है जो पहले धाम में चला गया। संसार की दृष्टि से तो यह बड़ी विपत्ति कही जायेगी। फिर भी जिस में समभाव हो वही सच्चा भक्त ।

इसीलिये तो ब्रह्मानंद स्वामी ने कहा है कि -

जगनुं सुख दुःख रे,
मायिकमिथ्या करी जाण्ये ।
तन धन जाता रे,
अंतर मां शोक न आने ॥

स्वामिनारायण भगवान वचनामृत में कहते हैं कि, जिसने ऐसे द्वन्द्व को जीत लिया है, उस समय जिस में समभाव आ गया है, वह मरकर ही नहीं अपितु शरीर धारण किये हुए वह अक्षरधाम में है ।

•

पढे विना विद्या मले ?

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

मित्रों ! हमें अच्छे प्रतिशत से पास होना है ? जिंदगी में आगे बढना है ? तो इतना अवश्य ध्यान रखना । आलस्य, मोह, चपलता, अधिक बोलना, अभिमान, लोभ विद्यार्थियों में ये दोष बताये गये हैं । इन दोषो के परित्याग से ही विद्या में सफलता मिलती है ।

इन सभी का ध्यान रखकर ही जंगल में एकलव्य ने अपने गन्तव्य मार्ग में सफलता प्राप्त की थी और विश्व विख्यात बना ।

एकलव्य भील जाती का था । उसे गुरु द्रोण के पास विद्याभ्यास करना था । लेकिन गुरु द्रोण रामकुमारों के गुरु थे । उनके आश्रम में बड़े-बड़े राजाओं के राजकुमार विद्याभ्यास के लिए आते थे । उन्हें ही प्रवेश मिलता था । दूसरे को नहीं । इसी कारण से एकलव्य को एडमीशन नहीं मिला । लेकिन एकलव्य ने दृढ निश्चय किया था कि मैं विद्याभ्यास गुरु द्रोण के पास ही करुंगा । दूसरे के पास नहीं उस समय अन्य आश्रमों में भी विद्याभ्यास चलता था । लेकिन एकलव्य ने दूसरे को गुरु नहीं बनाया । मुझे एकमात्र द्रोणाचार्य को ही गुरु बनाना है । मैं उन्ही से धनुर्विद्या सीखूंगा । जंगल में किसी नदी के किनारे से मिट्टी लाकर सुन्दर गुरुद्रोण की आकृति की कल्पना करके वही स्वरुप बनाया । आँख-नाक-कान सभी अवयव वैसे ही जैसे बोल दे । अब उसी स्वरुप में गुरुद्रोण का भाव करके विद्याभ्यास करना है । यही हमारे गुरु हैं ।

एकलव्य ने आलस्य का त्याग किया । एकलव्य कभी भी प्रातः उठने में आलस्य नहीं करता था । भीलज्ञाति का होते हुए भी स्नानादिक शुद्धि के बाद में यह पवित्र क्रिया प्रारम्भ करता था । प्रथम गुरुपूजा करके बाद में मन को एकाग्र करके गुरुकी बनाई गयी मूर्ति में मन को जोड़ देता था । प्रतिदिन का यह क्रम बन गया था । इस में कोई आलस्य नहीं करता । जंगल में घूमने या किसी व्यावहारिक कार्य के लिए भी नहीं जाता था । खाने-पीने में जो मिलता उसी में संतोष करता । किसी अच्छी प्राप्ति में चाहना नहीं रखता था । जंगली फल खाकर समय पालन करता था । किसी प्रकार की चपलता नहीं रखता था । जब वह अपना अभ्यास करता उस समय मन की वृत्ति को उसी में लगाता-अन्यत्र नहीं जाने देता था । मन की चंचलता को रोककर एकाग्रता से अभ्यास करता था ।

आपके मन में ऐसा होगा कि कभी तो अपने मित्रों को मिलने जाता रहा होगा ? लेकिन वह तो मन में दृढ निश्चय किया था कि मुझे धनुर्विद्या में पारंगत होना है । इसीलिए तो घोर जंगल में चला गया था । किसी से बात करने का अवसर ही नहीं । वह भी यदि चंचल मन से विद्याभ्यास किया होता, मित्र बनाया होता तो अपने गन्तव्य तक नहीं पहुंच पाता । यही विचार कर उपरोक्त सभी निर्णय लिया था ।

इतनी निष्ठा रखकरमन को गुरु में जोड़ा-परिणामत गुरु के साथ मानसिक सम्बन्ध जुड़ गया । गुरु द्रोण के हृदय में से सभीज्ञान एकलव्य में आ गये । गुरु के साथ एकता होने से हृदय में स्थित विद्या चुंबकीय तरंगो से खिंचकर आ गयी । अब वह सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर हो गया । अद्‌भुत पराक्रमी बन गया । अनहद शक्तियों का भंडार बन गया । यह आप को कैसे खबर ? उसी जंगल में एकबार अपने शिष्यों के साथ गुरु द्रोण जंगल में घूमने के लिए निकले । उनके साथ में अर्जुन, भीम, दुर्योधन, दुःशाशन इत्यादि कौरव-पांडव तथा अन्य राजकुमार भी थे । इनके साथ एक कुत्ता भी चल रहा था । वह इनलोगों से थोडा आगे निकल गया - जहाँ एकलव्य का स्थान आ गया । एकलव्य को देखकर कुत्ता भूंकने लगा । यह देखकर एकलव्यने ऐसे बाण मारे की कुत्ता का मुंह बन्द हो गया जिससे उसका भूंकना बंद हो गया । लेकिन कुत्ते के मुंह से एक रक्त का कण भी नहीं निकला । वह कुत्ता दोणाचार्य के पास आया, यह देखकर सभी को बडा आश्चर्य हुआ । यह कैसी अद्‌भुत विद्या । गुरु द्रोण को भी यह नया लगा । जिससे वे उसके पास सभी को लेकर गये और पूछे कि तुम कौन हो, और ऐसी अद्‌भुत विद्या किससे सीखे हो ? तब एकलव्य गुरु बन्दना करके कहा कि यह सब आपकी कृपा एवं आशीर्वाद से हुआ है । मैं यह उत्तम ज्ञान आपके पास से प्राप्त किया हूँ । यह झूठी वात है मैंने तुम्हे कभी ज्ञान नहीं दिया है । लेकिन गुरुदेव मैं सम्पूर्ण विद्या आपके पास से प्राप्त किया हूँ । देखिये यह आपकी प्रतिमा है । इसी प्रतिमा को लक्ष्य में रखकर मैंने जो भी प्राप्त किया । वह आपके सामने है । बडी नम्रता से कहा कि यह सब आपके आशीर्वाद से संभव हुआ है । तब गुरु द्रोण के मन में हुआ कि इसकी परीक्षा

अनुसंधान पृष्ठ नंबर २१

?????????????? प्रश्न पेटी ??????????????



साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ गुरु के दर्शन हेतु कभी भी खाली हाथ नहीं जाना चाहिए । ऐसी सूचना श्रीजी महाराज शि.प. के किस श्लोक में दिये हैं ?

प्रश्न : २ भगवान के चरण चिन्हों के नाम बताइये ?

प्रश्न : ३ विशेष नियम के नाम बताइए । वह कहाँ बताया गया है ?

प्रश्न : ४ भगवान स्वामिनारायणने अपना गुरु किसे बनाया तथा उनके पास से कौन दो बरदान मांगे ?

प्रश्न : ५ चार आश्रम के नाम लिखिये ?

प्रश्न : ६ कुसंगी के नाम बताइये ?

प्रश्न : ७ सन्यासी के नाम बताइए ?

जुलाई २००६ महीने के प्रश्नपेटी का सच्चा उत्तर तथा उत्तर देने वालों का नाम ।

(१) शिक्षापत्री श्लोक १४६ ।

(२) भगवान को प्रसन्न रखने के लिए चार साधनो का ख्याल रखो । १. अपने वर्णाश्रम धर्म में अचल निष्ठा । २. आत्मनिष्ठा । ३. भगवान के विना सभी पदार्थ में अरुचि । ४. भगवान के माहात्म्य के साथ निष्काम भक्ति ।

(३) स्वामिनारायण भगवानने जो ब्रह्मानंद स्वामी की धोती दी थी वह "गढडा गाँव के रइश जेठा मेर की पत्नी" ने सूत में से कात कर बनाई थी, जिसे सहजानंद स्वामी को दी थीं ।

(४) सहजानंद स्वामीने अहमदाबाद में जब सर्व प्रथम मंदिर करने का संकल्प किया तब (९९ वर्ष के पट्टे) पर जमीन मिली थी । उस समय के अंग्रेज जनरल गार्डन साहेब को नीचे की चार कडी सुनाई थी ।

बन्दे बहुत न कीजिये अंतर में अभिमान, अपना किया न होत है करता हक सुलतान ।
करता हक सुलतान, हुकम बिनपान न डोले, मगरुरी में मूर्ख काहि कुं बक बक बोले ।
दाखल ब्रह्मानंद पलक में हि काल ग्रसी दे, अंतर में अभिमान बहुत नहिं कीजे बन्दे ।

(५) भगवान स्वामिनारायण ने नित्यानंद स्वामी से कथा का प्रारंभ करवाया था ।

(६) सं. १९४४ के वैशाख वद-५ बुधवार को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री केशवप्रसाददासजी के वरद हाथों से प्रांतीज मंदिर की प्रतिष्ठा हुई थी ।

(७) श्री हरिलीला सुधाकर नामक ग्रंथ की रचना "स.गु.ब्र. कृष्णानंदजी स्वामी"ने किया है ।

१. डाभी सरदारजी (डांगरवा-कडी)
२. अरविंदाबहन एन. भावसार (चांदलोडिया)
३. अंजनाबहन मनुभाई पटेल (नांदोल)
४. पटेल कैलासबहन विष्णुभाई (नांदोल)
५. शारदाबहन कांतिभाई पटेल (नांदोल)
६. भावेश हरिभाई पटेल (अंजार)
७. अल्पेश नरसिंहभाई पटेल (नडीयाद)
८. सहदेव राघेश्यामभाई पटेल (देश वालिया-एम.पी.)
९. जयेश परसोत्तमभाई पटेल (कुंजाड)
१०. घनश्यामभाई मूलजीभाई पटेल (अहमदाबाद)
११. माणेकलालमणीलालपटेल, शिल्पाबहनमणीलाल(दहेगाम)
१२. साकरबहन नटवरभाई पटेल
१३. बुटिया रणछोडभाई (बडोल)
१४. जिज्ञेश लक्ष्मणभाई चावडा (बडोल)
१५. चन्द्रसिंह के. चावडा (अहमदाबाद)
१६. रेखाबहन मुकेशभाई मांडाणी (अहमदाबाद)

नोंट : प्रश्नपेटी का उत्तर प्रत्येक महीने की २२ तारीख तक आना अनिवार्य है । इसके बाद के आए हुए उत्तर का नाम लिखा नहीं जायेगा । जिसको सभी लोग जानलें ?

।। भक्तिसुधा ।।

शूरवीर भक्त सेर मिया

- सां.यो. कमलाबा-कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

भगवान स्वामिनारायण तथा उनके संत गाँव-गाँव घूमकर समाज में अज्ञान-अंधकार के दूर किया था । सभी जगहपर धर्म-सदाचार का प्रकाश फैलाया । समाज के विविध क्षेत्र में स्थित आसुरी तत्व को उखाड़ फेंका था । समाज के कतिपयलोग संतो को परेसान करते-मारते-भोजन में धूलडाल देते इस प्रकार के दुराचारों से संत कभी भी प्रतिकार नहीं करते थे । बल्कि अपनी सूझ-बूझ तथा अपनी नैतिक वीरता से समाज के लिये उपयोगी बनते गये, जिससे सत्संग का विकास होता गया ।

वढवाण राज्य का कारभारी भामजी मेहता से संप्रदाय की प्रतिष्ठा सहन नहीं हो रही थी, जिससे वह स्वामिनारायण की निंदा करता रहता था ।

एकबार ऐसा हुआ कि एक ब्राह्मण को गढडा भगवान स्वामिनारायण का दर्शन करने जाना था तो वह महेता के पास पैसा मांगने गया । उस समय उसने उस ब्राह्मण को बहुत भलाबुरा सुनाया - तुम्हारा स्वामिनारायण चाहे जितना चमत्कारिक हो, अपने को भगवान मानता हो, हम उसे मोची मानते है, हाँ उसे मोची मानकर गाली दे तो तुम्हें पांच रुपये दूँ । वह ब्राह्मण थोडा विचार किया, लेकिन पैसा की लालच में गाली देने लगा । वहाँ महेता का कार्यभारी केसरमीया नये सत्संगी हुए थे, मुश्लिम थे, लेकिन खूब शूरवीर थे । जिससे उन्हे बर्दास्त नहीं हुआ । ब्राह्मण को गाली देने से रोका । अरे तूं ब्राह्मण होकर पैसे के लालच में मेरे स्वामिनारायण भगवान को गाली देने में संकोच नहीं करता है । यदि गाली देगा तो तुम्हे एक मिनिट में जमीनपर गिरा देंगे । उस समय महेता ब्राह्मण को चढाते हुए कहा कि मै बैठा हूँ, यह क्या कर सकता है, तुम गाली देते रहो, अब तो ब्राह्मण गाली देना प्रारम्भ कर दिया । तुरंत ही केशरमियां अपनी म्यान में से तलवार खीच लिये और ब्राह्मण को भोंक दिये, वह ब्राह्मण वहीं गिरगया । महेता ने केशरमियां को नौकरी में से निकाल दिया । केशरमिया निकलने वाले ही थे की सभी बात रानी साहब को कह दिया । रानी को हुआ कि यह कोई राजकीय अपराध नहीं है । रानी ने महेता को समझाया और केशरमियां को पुनः रख लिया । केशरमिया आनंद में आ गये प्रभु का आभार माने । इधर महेता स्वामिनारायण का खराब बोलना बन्द कर दिया ।

एकवार बढवाण से कुछ मित्रों के साथ केशरमिया जा रहे थे, उन्हें हुआ की बीच में गढपुर आता है - वहाँ भगवान का दर्शन करता चलूँ, अन्यों से कहा कि मुझे भगवान का दर्शन करने जाना है आप लोगों को आना हो तो आओं या यही खड़े रहो, या चलो मैं पीछे से आप सभी का साथ पकडलूंगा । किसी ने कहा कि तेरे भगवान तुझे कुछ देते हैं, तो केशरमिया ने कहा, भगवान को देना होता है, लेना नहीं । उस में से किसी ने कहा यदि तुम्हारे भगवान विना मांगे सोना की भेंट दे तो हम मानेंगे कि भगवान सच्चे हैं । केशरमिया ने कहा भगवान दे या न दें तो भी वे सत्य तो हैं ही । इस प्रकार वात करते हुए सभी दादा के दरबार में पहुंच गये । महाराज निंबवृक्ष के नीचे विराजमान थे । अगल बगल भक्तजन विराजमान थे । उसी समय ये लोग पहुंचे । भगवान को साष्टांग प्रणाम करके सामने बैठे । इतने में भगवान अपने गले से एक आभूषण निकाल कर केशरमियां के गले में डाल दिये, और कहने लगे लो यह सुवर्ण का खितांब । साथ में आये हुए सभी को अपने गले से पुष्पहार निकाल कर पहनाया । महाराजने केशरमिया से कहा, आपको महेता जी ने नौकरी में से निकाल दिया, इसकी बात बताओ । केशरमिया सभी बात बतादिये । महाराजने कहा "अरे ! केशरमिया वह मुझे गाली दिया तो मेरी शरीर में कहाँ चोट लग गयी । आप जल्दी नहीं किये होते तो ? यह तो ठीक रानी ने आपको पुनः नौकरी में रख लिया, अन्यथा । नौकरी के बिना क्या करते ? महाराज के ऐसे वचन सुनकर केशरमियां ने कहा "महाराज ? महेता यदि नौकरी में से निकाल देता तो भी कैसे भी करके पेट भरते, लेकिन कोई आप को गाली दे वह मुझे सहन नहीं है ?" केशरमिया की ऐसी वाणी सुनकर महाराज प्रसन्न हो गये । महाराज ने कहा आप एकांतिक भक्त हैं । महाराज का आशीर्वाद लेकर केशरमिया चल दिये । साथ में आये हुए साथी कहने लगे कि केशरमिया तूं भी सच्चा तेरे स्वामिनारायण भी सच्चे । तुम्हे सोने का हार पहनाये और हम लोगों को पुष्पहार पहनाये । उनके पास जो भी आता उसे हार पहनाते, पता नही पुनः गले में कहाँ से हार आजाता था । इस प्रकार देखकर हम सभी को आश्चर्य हुआ ।

इस प्रकार हमें भी केशर मिया की तरह निष्ठावाला होना चाहिए । भगवान या आचार्य महाराजश्री को कोई अपमान जनक शब्द बोले तो उसका जवाब देना चाहिए । केशरमिया की तरह जवाब देने

पर महाराज बहुत प्रसन्न होते हैं ।

•

कठलाल की वृद्धा

- ध्वनि पटेल (हरभोलानाथपार्क

लोया के तीसरे वचनामृत में श्रीजी महाराज ने कहा है कि "जिन्हे भगवान एवं संत के प्रति माहात्म्य ज्ञान के साथ निश्चय हो, उन्हें सर्वार्थ की प्राप्ति समझनी चाहिए । इसके साथ भगवान एवं संत में निश्चय हो तो उसे चाहिए की कुटुंब, लोकलाज, राज्य, सुख, धन, स्त्री, स्त्री हो तो पुरुष का त्याग करदे" । ऐसा कहकर हरिभक्तों की बात सभी को महाराज ने सुनाई, जिस में "कठलाल की वृद्धा" के रुप में महाराज उल्लेख किये । इनका नाम था रामबाई । ज्ञाति की ब्राह्मण थी । पूरे गाँव में अकेली सत्संगी थी । एक समय कूएँ पर पानी भरने गयी तो गाँव की स्त्रियों ने कहा कि तुम्हारे स्वामिनारायण अभी इस तरफ गये हैं ।

सुनने के साथ ही पानी का घडा लेकर वह वृद्धा दौड़ने लगी । थोड़ी दूर जाने के बाद देखा तो महाराज घोडो के बीच में घिरे हुए चले जा रहे थे । वहीं से जोर जोर चिल्लाते हुए कहने लगी कि महाराज खड़े रहिए-खडे रहिए ।

वृद्धा की आवाज सुनकर महाराज खड़े रहे । वृद्धा माता वहाँ तक दौड़ते हुए पानी का घडा साथ माथे पर लिए पहुँची, हांफती हुई, वही बैठ गयी । और हाथ जोड़कर कहने लगी, महाराज ! हमारे घर को छोड़कर आप बाहर-बाहर क्यों चले जा रहे हैं ? वृद्धा माता हमें जल्दी थी इस लिए, महाराज ने कहा ।

अच्छा प्रभु ! इस गाँव में मैं अकेली हूँ इसलिए आप छोड़कर चले जा रहे हैं । यहि सम्पूर्ण गाँव सत्संगी होता तो आपको जाने देता ? अब आप इस घड़े का जलपान कीजिए, बाद में अपने चरण को इसी में बोर दीजिए । महाराज वैसा ही किए और पूछे कि अब इस पानी का क्या करोगी ? महाराज इस चरणोदक को कूएं में डालूंगी । प्रसादी का जल सभी के पेट में जायेगा तो सभी का अंतर पवित्र होगा । अंत में संम्पूर्ण गाँव सत्संगी होगा । बाद में आप बाहर-बाहर कैसे जाओगे ? यह देखना है ।

वृद्धा को कितना माहात्म्य है । यह देखकर महाराज खूब प्रसन्न हुए । वृद्धा माता वह जल कूएं में डाली । बाद में सम्पूर्ण गाँव सत्संगी हो गया । श्रीहरिने लोया के तीसरे वचनामृत में इस वृद्धा का माहात्म्य याद किया है ।

हम लोग प्रतिदिन भगवान को अर्पित किये हुए प्रसाद का जल लेते हैं। परंतु हम कठलाल की रामबाई के जितना महिमा समझते हैं ? भगवान को प्रार्थना है कि हम भी ऐसी महिमा को समझे ।

•

सच्चाज्ञान (माया का स्वरुप)

- सां.यो. कुन्दनबा गुरु कंचनबा (मेडा)

हे प्रिय भक्तो ! विगत अंक में हम जीव के स्वरुप का ज्ञान प्राप्त किये । अब माया के स्वरुप के विषय में जानकारी करें ।

जो माया है वह अनादि है । प्रत्येक जीवात्माओं का जन्म क्षेत्र है । माया चितजडात्मक है, गाढ अंधकार रुप है, परमात्मा की शक्ति है । कार्यरुप स्थूल तथा कारणरुप सूक्ष्म स्वरुपवाळी है । सत्वगुण, रजोगुण, तमोगुण तीनो गुणों से युक्त है । उत्पन्न न होने से इसे अजा कहा गया है ।

हे भक्तों ! जब आप भगवान की मूर्ति का ज्ञान करते हों, ध्यान करते हो, भजन करते हों, उस समय दूसरी जो भी याद आवे वही माया है । ध्यान करते समय, स्त्री, पुत्र धन, मां-बाप इत्यादि का स्मरण होना ही माया है ।

हे भक्तों ! शिक्षापत्री में श्रीहरि ने कहा है कि - अहं - एवं ममता कराने वाली माया है । अहम् अर्थात् मैं बड़ा ज्ञानी हूँ, मैं बडा बक्ता हूँ, शेठ हूँ, धनवान हूँ, बडा प्रेसीडेन्ट हूँ, प्रतिव्रता हूँ, बडा भक्त हूँ, इस प्रकार जिसे ज्ञान है वह माया के अधीन है । यह मेरी पत्नी है, यह मेरा बंगला है, यह मेरा बेटा है, ऐसा कहते हुए सम्पूर्ण जीवन पूर्ण कर देते हैं। हे प्रिय भक्तों हमें एकांतिक भक्त बनकर मैं-मैं की जगह पर सब प्रभु का है मेरा कुछ नहीं है, हम तो प्रभु के दास हैं ऐसा कहना है, ऐसा ही वर्तन करना है ।

मै और मेरा, तूं औत तेरा ही माया है । माया में बहुत शक्ति है । वह बड़े-बडे को वश में की है । अनादि काल से मानव का माया के साथ युद्ध होता चला आया है । जीवात्मा माया छोडकर परमात्मा के पास जाये, यह माया को स्वीकार्य नहीं है । वह तो संसार के भवाटवी में फंसाये रखती है । जीव मुक्त है । लेकिन माया उसे बांध रखी है । इसीलिए तो जीव विषय त्याग कर नहीं पाता है । माया मनुष्य को दो प्रकार से मारती है । घर की सभी अनुकूल परिस्थिति में भी भक्ति नहीं करने देती, २. अधिक से अधिक एकत्रित करने की भावना प्रतिकूलता में हृदय को जलाती रहती है । संसार में माया ने ऐसा आकर्षण किया है कि पंचविषयों का सुख अच्छा लगता है ।

सारंगपुर के १८वें वचनामृत में श्रीजी महाराज कहते हैं कि एक प्रमाद दूसरा मोह दोनो का जो त्याग करे वही भगवान की माया से तर सकता है । प्रमाद-मोक्ष के मार्ग का बाधक है । केवल देह सुख में प्रयत्न शील रहती है । भजन भक्ति में आलस्य आवे उसे ही

प्रमाद कहेंगे । मोह अर्थात् जिस में सुख है लेकिन सुख दिखाई नहीं देता । पंच विषयात्मक सुख क्षणिक सुख है, इसीको मोह कहते हैं । जो माया को पहचानता है वह माया से दूर रहता है । लेकिन कोई तो अहम् में बंधा हुआ है । कोई ममता में कितने लोग प्रमाद से, कितने लोग मोह में बंधे हुए है । ऐसी यह दुष्त्यज माया है । यह जीवात्मा मायारुपी कोठी में बैठकर विषय वासना का उपभोग कर रहा है । लेकिन जब जीवात्मा सम्पूर्ण विषयों को छोडेगा तभी मायारुपी कोठी से बाहर निकल सकेगा ।

हे भक्तों ! सनकादिक काम को जीते लेकिन क्रोध के आधीन हुए । गृहस्थों को माया फंसाती है, तथा साधुओं को कीर्तन में फंसाती है । परमात्मा की इस त्रिगुणात्मिका माया को पार करना बड़ा कठिन है । इस माया को तो मात्र भगवान के भक्त ही तर शकते है, अन्य नहीं ।

हम भगवान की माया को अच्छी तरह जानकर भगवान में ही दृढ भक्ति करेंगे तो माया से तर जायेंगे । दृढ आश्रय किसे कहा जाय । तो भक्त महाप्रभु का आश्रय लेकर दुःख में सुख का तथा सुख में सुख का आनन्द लेकर साम्यास्थिति पर पहुँच गये है, प्रभु की मरजी मानकर जो व्यवहार करते है वेही प्रभु का दृढाश्रयी भक्त है ।

हे भक्तों ! हमें भी इस माया से तरना है और भगवान का एकांतिक भक्त बनना है । इसके लिए हमें क्या करना चाहिए ? तो हे भक्तों । श्रीजी माहाराज ने शिक्षापत्री, सत्संगिजीवन में जो आज्ञा की है उसका अक्षरशः पालन करना उचित होगा । जगत सम्बन्धि विषयों का त्याग करके भगवान संबन्धी विषयों में मन लगाना होगा । तन-मन-धन सभी भगवान स्वामिनारायण के चरणों में अर्पित करके महाराज जिसमें प्रसन्न हों वही करना होगा । भगवान तथा भगवान के संत-भक्तों के साथ अधिक प्रेम करना होगा ।

हे भक्तों ! सभी का कर्ता, सभी का कारण, ऐसे सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण की एकांतिक भक्ति करके अक्षरधाम में महाराज की मूर्ति का अखंड एवं अविनाशी सुख प्राप्त करना ही है । ऐसी विचारधारा आज से बनानी होगी जिससे श्रीजी महाराज का दृढ आश्रय उत्तरोत्तर बढता ही रहे और परमात्मा की भजन सतत हृदय से होती रहे तभी इस जीव का कल्याण सम्भव है ।

पृष्ठ ८ से आगे.....

कृत्या को हनुमानजी ने सबक सिखाया

अंनतकोटी ब्रह्मांड के राजाधिराज बालस्वरुप की सेवा का लाभ मिला हनुमानजी बालस्वरुप घनश्याम महाराज के पास जाकर पुष्प से सजाये हुए सुख शैय्या पर बिराजमान बालस्वरुप घनश्याम महाराज को हनुमानजी ने गोद मे उठा लिया चरणस्पर्श किया कि तुरन्त हनुमानजी की मनोवृत्ति भगवान के चरणकमल मे स्थिर हो गई बालस्वरुप घनश्याम महाराज के चरणकमल के जो १६ चिन्ह अष्टकोण, ऊर्ध्वरेखा, स्वस्तिक, जामुन, जव, वज्र, अंकुश, केतु, पद्म, त्रिकोण, कलश, गोपद, धनुष, मीन, अर्धचन्द्र, व्योम दाहिने चरण के अंगूठे के नख में जो चिन्ह है उन सब का दर्शन करने मे बहुत समय लग गया उधर भक्तिमाता एवं धर्मपिता चिंन्ता करने लगे कि हमारे घनश्याम को क्या हुआ होगा अभीतक हनुमानजी आये क्यों नही इधर धर्मदेव और भक्तिमाता विलाप कर रहे है कि उधर घनश्याम महाराज ने कहा कि आप मेरी मूर्तिका सुख लेरहे हैं मगर मेरे घर पर मेरे माता-पिता प्राण त्यागने की स्थिति मे हैं आप मुझे मेरे घर तक पहुँचा दें हनुमानजी ने कहा जैसी आपकी आज्ञा वहाँ से हनुमानजी तीव्र गति से धर्मके द्वारपर आये कि वहाँ भक्तिमाता तथा धर्मपिता के शरीर में फिर से जीव आ गया । भक्तिमाता तुरंत दौड़कर हनुमानजी की गोद से घनश्याम महाराज को ले लींया फिर हनुमानजीने कहा मैया कुछ काम पडे तो मुझे याद कीजिएगा मै दास हनुमान अपने प्रभु की सेवा का अमूल्य लाभ लेने के लिये आजाया करुँगा और फिर हनुमानजी ने घनश्याम महाराज की स्तुति की फिर अन्तर्ध्यान हो गये ।

पृष्ठ १७ से आगे.....

सत्संग बालवाटिका

करनी चाहिए - और उन्हों ने कहा कि यदि तुम मुझसे विद्याभ्यास किया है तो दक्षिणा तो देनी चाहिए हाँ गुरुदेव ? क्यों नहीं आप जो मांगे हम देंगे ।

तब गुरुद्रोण ने एकलव्य से दाहिने हाथ का अंगूठा दक्षिणा में मांग लिया । उसी समय अपने दक्षिण हाथ के अंगूठे को काटकर दक्षिणा के रुप मे अर्पित कर दिया । ऐसा उसके मन में नहीं आया कि दक्षिण हाथ के अंगूठे के बिना हम धनुष-बाण कैसे चला सकते है । इसे ही सच्चा शिष्य कहते है ।

धनुर्धारी तो बुहत थे लेकिन एकलव्य तो सारी दुनियां में प्रसिद्ध हो गया । आज भी उसकी कीर्ति गायी जाती है ।

इसी पर निष्कुलानंद स्वामी कहते हैं कि -

मन गमतु मेली करी, रहे आज्ञा अनुसार ।
तेज शिष्य साचा खरा, बीजा सर्वे संतापनार ।।

मित्रों ! अपने भगवान स्वामिनारायण द्वारा स्थापित गुरुपरंपरा में ऐसी ही निष्ठा रखेंगे तो गुरु - गोविन्द की प्रसन्नता मिलती रहेगी ।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में गुरुपूर्णिमा महोत्सव

अषाढ सुद व्यास पूर्णिमा के शुभ दिन पर समस्त सत्संग के धर्मगुरु प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का पूजन करने के लिए बडी संख्या में संत और हजारो की संख्या में हरिभक्तगण पधारे थे। श्री नरनारायणदेव की शृंगार आरती अपने हाथों से उतारकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री प्रसादी के सभामंडप में सुवर्ण सिंहासन पर विराजमान हुए थे। हजारो संत हरिभक्तो ने अपने गुरुवर्य का दर्शन कर के आनंदित हुए थे।

सबसे पहले विद्वान विप्रोने वेदमंत्रो के द्वारा स्वस्तिवाचन किया प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन किया था। अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी शा. निर्गुणदासजीने गुरुपूर्णिमा का शास्त्रोक्त महिमा का वर्णन किया और सभी को सुंदर बाते बताई थी। उसके बाद प्रथम पू. लालजी महाराजश्री तथा गुरुवर्य प.पू. आचार्य महाराजश्रीने मंगल आशीर्वचन प्रदान किए। प्रथम पू. संतोने और विशाल संख्या में पधारे हुए हरिभक्तों ने पुष्पमालाए पहनाकर हृदय के भावों से प.पू. आचार्य महाराजश्री के दर्शन के लिए पधारे थे। वास्तव में इस भावपूर्ण प्रसंग में सभी को आनंद की अनुभूति हुई। सभा का संचालन श्री सत्यप्रकाश स्वामीने किया।

- धर्मप्रकाश स्वामी

प.पू. लालजी महाराजश्री का ९वाँ जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के पुत्र रत्न और संप्रदाय के भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराज १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ९वाँ जन्मोत्व अषाढवद-१० के शुभ दिन बहुत ही धूमधाम से मनाया गया।

श्री नरनारायणदेव की शृंगार आरती अपने वदह् हाथों से उतारकर अपने दादा निवृत्त आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के साथ प.पू. लालजी महाराजश्री सभा मंडप में सुंदर आसन पर विराजमान हुए। तब पू. संतो और हरिभक्तो तथा यहाँ उपस्थित सभी सहजानंद गुरुकुल के छात्रो ने तालिओं का हर्षनाद करके प.पू. लालजी महाराजश्री को जन्मदिन की बधाई दी और आशीर्वाद भी प्राप्त किया।

पू. महंत स्वामी की अनुपस्थिति में शा. सत्यप्रकाश स्वामीने सभा का संचालन किया। प्रथम विद्वान विप्रो के स्वस्तिवाचन के बाद श्रेष्ठ और बडे हरिभक्तोने पुष्पमाला पहनाकर पूजन करके प.पू. लालजी महाराजश्री की आरती उतारी थी। सभा में छोटे-छोटे सभी संतोने अपने वक्तव्य द्वारा प.पू. लालजी महाराजश्री के जन्मोत्सव के प्रसंग पर शुभेच्छा प्रदान की।

प.पू. लालजी महाराजश्री अपने आशीर्वाद प्रवचन में "अधम उद्धारण अविनाशी तारा" यह कीर्तन का गान किया था। जिससे सभी लोग अति आनंदित हुए। इस तरह अति हर्षानंद के साथ जन्मोत्सव भावपूर्वक मनाया गया।

- विश्ववल्लभदासजी

अक्षरमहोल वाडी के प्रार्थना मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा

जेतलपुर धाम के महान तीर्थरुप अक्षरमहोल वाडी में श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से तथा पू. पी.पी. स्वामी और महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से संप्रदाय में और गुजराती पद्य साहित्य में जिनका नाम पहला आता है वे है कवि श्री दलपतराम। जिन पर कविवर्य ब्रह्मानंद स्वामी की अति कृपा थी। ऐसे कविश्री के वंश के परिवार आज भी 'कवि' के नाम से जाने जाते है। जिन्होने यहाँ सुंदर सेवा करके प्रेरणा दायी उदाहरण दिया है। ऐसे कलाबहन कवि के परिवारने श्री देविकाबहन वसंतभाई त्रिवेदी (शिकागोवाले) ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से विद्यार्थी संतो-भूदेव सभी अभ्यास के साथ भगवान की प्रार्थना पूजा अर्चन सुंदरता से कर सके इस हेतु महंत के.पी. स्वामी के मार्गदर्शन के साथ बहुत सुंदर योगदान प्रदान किया। इस कारण प्रार्थना मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से धूमधाम से संपन्न हुई थी। जिस में विद्वान संतगण, पाठशाला के प्रधानाध्यापकश्री और अन्य शिक्षकगण तथा विद्यार्थी संत उपस्थित थे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प्रार्थना मंदिर और पाठशाला एवं छात्रालय की विविध प्रवृत्ति देखकर अति प्रसन्न हुए थे।- *शास्त्री स्वामी हरिओमप्रकाशदासजी*

कांकरिया रामबाग मंदिर में झूलोत्सव दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से और महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी तथा कोठारी आनंद स्वामी की प्रेरणा मार्गदर्शन से अपने मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के समक्ष विविध प्रकार के नवीन झूलोत्सव के दर्शन

नाथद्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव के निमित्त

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से नाथद्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्व कारतक सुद-९ के दिन हर वर्ष होगा। जिसकी नोट सभी हरिभक्तगण लें।

- महंत स्वामी, नाथद्वारा

भाद्रशुक्ल-१५ को खंडग्रास चन्द्र ग्रहण

भाद्र शुक्ल१५ गुरुवार
ता. ७-९-२००६

ग्रहणवेध : दोपहर में २-००
(ग्रहणवेध के बाद भोजन नहीं करना)
ग्रहण स्पर्श : रात्रि में ११-३०
ग्रहण मध्य : रात्रि १२-२४
ग्रहण मोक्ष : रात्रि १-०८ हथ.

यह ग्रहण एशिया, आस्ट्रेलिया, युरोप, अफ्रिका के देशोम में दिखाई देगा। वहाँ के समयानुसार पालन करना है।

का निर्माण श्रद्धालु हरिभक्तों के सहकार से किया गया। पूजारी स्वामी देवकृष्णदासजी और संत मंडल ठाकुरजी का नवीन शृंगार करके हरिभक्तों को दर्शन का सुख प्रदान करते हैं। *- साधु यज्ञप्रकाशदास*

धोलका श्री मुरली मनोहर देव के सानिध्य में भव्य झूलोत्सव दर्शन

सर्वोपरि श्रीहरि की कृपा और श्रीहरि के अपर स्वरुप प.पू. महाराजश्री, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प्रथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी जगतप्रकाशदासजी तथा महंत विष्णुप्रसाददासजी की प्रेरणा से श्रद्धालु-धर्मप्रेमी हरिभक्त यजमान पद पर रहकर ठाकुरजी को बिस्कुट, धान्य, चोकलेट, फ्रूट, सब्जी, मेवा आदि भिन्न प्रकार के भव्य झुलोत्सव दर्शन संत मंडल और धोलका सत्संग मंडल की सेवा भावना से किया जाता है। हरिभक्तों को झुलोत्सव दर्शन का अलौकिक लाभ मिलता है।

- धोलका सत्संग मंडल

नारायणघाट मंदिर में कलात्मक भव्य झूलोत्सव दर्शन

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव की प्राकट्य भूमि सर्वोपरि तीर्थधाम नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर में दिव्य कलात्मक भव्य झूलोत्सव दर्शन ता. १६-७-०६ के दिन प.पू.ध.धु. बडे महाराजश्री के वरद् हाथों से दर्शन के हेतु खुले किए गए थे।

इस प्रसंग पर प्रासंगिक सभा में प.पू. बडे महाराजश्री ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि, संतोने बहुत मेहनत की है। श्री गोविंदभाई बारसीया आदि भक्तो के सेवा सहकार से यह भगीरथ कार्य सम्पन्न हुआ। उसके बाद नूतन भोजनालय का प.पू. बडे महाराजश्री के वरद हाथों से उद्घाटन विधिवत हुआ। उसी दिन साम को समस्त सत्संग के प्राण प्यारे प.पू. लालजी महाराजश्री ठाकुरजी को झुलाने के लिए पधारे और दर्शन किए। इस प्रसंग पर महंत साधु घनश्यामप्रकाशदासने सुंदर व्यवस्था की थी। *- साधु भक्तिकेशवदासजी*

महेसाणा श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा पू.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से यहाँ का संत-मंडल स्वामी उत्तमप्रियदासजी और महंत स्वामी नारायणदासजी मंदिर में हर शनिवार और हर एकादशी के दिन सत्संग सभा का आयोजन करते हैं। जिस में श्रीहरि की कथावार्ता कीर्तन आदि किया जाता है। हरिभक्तगण रस पूर्वक भाग लेते हैं। ता. २५-६-०६ के रविवार को प.भ. अजयभाई सोनी के वहाँ सत्संग सभा का सुंदर आयोजन हुआ था। जिसमें महंत स्वामी और शा. उत्तमस्वामी आदि संतो ने नवधा भक्ति पर दृष्टांत सहित कथा कही थी। विसनगर सत्संग मंडल द्वारा कीर्तन भक्ति करके सभी को हरिरस में से तृप्त कर दिया था।

- बाबूभाई एन. चौधरी

टोरडा धाम में सत्संगिभूषण ज्ञानयज्ञ

प.पू. बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा प्रवर्तमान प.पू.ध.धु. आचार्य श्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आशीर्वादात्मक आज्ञा से स.गु. गोपालानंद स्वामी की दिव्य तीर्थधाम जन्मभूमि टोरडा में भक्तिशास्त्र सत्संगिभूषण सप्ताह ज्ञानयज्ञ का भव्य आयोजन किया गया। गं.स्व. साकरबहन, रणछोडभाई जेठावा (गांधीनगर) की जीवनचर्या प्रसंग पर आयोजित पारायण के वक्तापद पर प्रसिद्ध कथाकारक शा. हरिजीवनदासजी थे।

टोरडा महंत स.गु. कृष्णप्रसाददासजी स्वामी का आयोजन, प्रेरणा और व्यवस्था से प्रसंग बहुत अद्भुत हुआ। जेठवा परिवार की जन्मभूमि के दर्शन और सेवा का अमूल्य लाभ मिला। ता. ४-६-०६, पूर्णाहुति के दिन संतो की उपस्थिति में पारायण धूमधाम से सम्पन्न हुआ। मंदिर के पार्षदो ने अद्भूत सेवा की। *- सचिन भगत, टोरडा*

श्री स्वामिनारायण मंदिर नया वाडज

यहाँ मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से नए वाडज के हरिभक्तों एवं संतो ने कक्षा-१० और १२ में प्रथम तीन नंबरो से उत्तीर्ण हुए छात्रो को प.भ. नविनभाई परीख की तरफ से इनाम दिए गए। इस प्रसंग पर हरिभक्तों ने चातुर्मास में विशेष नियम लेकर श्रीहरि का भजन स्मरण किया।

- शंभुदानभाई टी. पटेल

पोखरा (नेपाल) में भव्य झूलोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य श्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से और यहाँ के संत स्वामी श्रीजी स्वामी तथा स्वामी लोकनाथदासजी की प्रेरणा से पोखरा मंदिर में लवींग-मरीच और दिया सलाई तथा धान्य का कलात्मक झूलोत्सव दर्शन वहाँ की स्थानिक प्रजा तथा यात्रिओं को करवाया गया।

आगामी जन्माष्टमी के दिन यहाँ भव्य रथयात्रा का आयोजन किया गया है।

- श्रीजी स्वामी पोखरा

धनबाद (बिहार)

यहाँ धनबाद में श्री स्वामिनारायण मंदिर का २३वाँ पाटोत्सव आषाढ सुद-१३ के दिन धूमधाम से मनाया गया। इस प्रसंग के उपलक्ष्य में कथा-पारायण ठाकुरजी का पाटोत्सव-अन्नकूट संतो द्वारा हुआ था। हरिभक्तोने श्रेष्ठ सेवा प्रदान कर दर्शन का लाभ लिया था।

- ललितभाई गांधी, स्वा.सत्संग मंडल

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

चराडवा मे २२४ दिवस की अखंड धून

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का २५ वें प्राकट्योत्सव (रजत द्विशताब्दी जन्मोत्सव) संप्रदाय के कई मंदिरो में धूमधाम से मनाया जा रहा है। अपने चराडवा मंदिर में अ.नि.स.गु. स्वामी विज्ञानदासजी के संतमंडल द्वारा "२२५ दिन अर्थात् ५४०० घंटे की अखंड स्वामिनारायण" महामंत्र धूनि का विशाल आयोजन किया गया है। ता. ९-७-०६ के शुभ दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने चराडवा पधारकर मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव की २५०० दीप के साथ विराट आरती अपने वरद् हाथों से उतारी। जिनके दर्शन करके भक्तगण अति आनंदित हुए। प.पू.ध.धु. आचार्य माराजश्री ने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिए और विशाल आयोजन के लिए महंत स्वामी जिष्णुचरणदाजी को प्रसन्नता का हार पहनाया था।

देश-विदेश से पधारे हुए हरिभक्तो की

उपस्थिति में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने अपने करकमलों द्वारा मंगलदीप को प्रगटाकर धुनि का आरंभ करवाया था।

पूजारी दिव्यप्रकाश स्वामी और नीलकंठ स्वामीने भगवान को सुंदरता से शिंगार धारण करवाए थे । शास्त्री व्रजवल्लभ स्वामी, शांतिप्रकाश स्वामी, दास स्वामी तथा मूलीधाम, मकनसर, ध्रांगध्रा, हलवद आदि धामों से पधारे हुए संतो ने सफलता के लिए योगदान दिया।

ता. ९-७-०६ से प्रारंभ हुई महामंत्र धुनि ता. १९-२-०७ तक ब्रह्मानंद से गुंजती रहेगी।

देश-विदेश के सभी हरिभक्तो, को उत्सव में पधारने का चराडवा के महंत स्वामी का दिव्य आमंत्रण टेलिफोन द्वारा जानकारी लेकर भजन-महोत्सव में दिव्य लाभ प्राप्त कीजिए।

-शा. सत्यप्रकाशदासजी

विदेश सत्संग वृत्तान्त

सीडनी (I.S.S.O. ओस्ट्रेलीया) श्री स्वामिनारायण मंदिर

सर्वोपरि श्रीजी महाराज के अपर स्वरुप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से अपने हरिभक्तो ने यहाँ सीडनी मंदिर में ठाकुरजी की सेवा पूजा-सत्संग आदि श्रीजी महाराज और प.पू. महाराजश्री की प्रसन्नता तथा जीवन के कल्याण के लिए किया है। ता. १३-५-०६ के दिन अहमदाबाद के अपने मेयर श्री अमितभाई शाह अपने मंदिर में महत्वरुप से समय लेकर दर्शन के लिए पधारे थे। हरिभक्तोने उनका स्वागत पुष्पहार पहनाकर किया था। वे मूल संप्रदाय की प्रवृति का मंदिर में दर्शन करके बहुत प्रभावित हुए थे।

सभा के यजमान ता. २१-५-०६ के दिन प.भ. डो. किरणभाई अमीन, ता. २८-५-०६ प.भ. भालचंद्र भावसार, ता. ४-६-०६ प.भ. हंसाबहन वाधजीयाणी थीं। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से मावजीभाई भूडीया (सुखपरकच्छ) हमारे मंदिर में सेवा-पूजा की प्रवृत्ति करते है। *- तेजश बी. पटेल*

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर (I.S.S.O., U.K.)

अनपे लेस्टर श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से ता. २५-६-०७ के दिन प्रातः १० बजे से दोपहर को २-०० बजे तक समूह महापूजा का आयोजन किया गया। श्री रसिकभाई जानी ने शास्त्रोक्त विधि से पूजा करवाई। अ.सौ. माधुरीबहन बाबुभाई सांठाने यजमान पद का लाभ लिया था। ठाकुरजी के अद्‌भुत चंदन चर्चित दर्शन का लाभ दिया गया। जिन के यजमान प.भ. तरुणभाई परसुरामभाई त्रिवेदी थे। ता. ११-७-०६ के गुरुपूर्णिमा के दिन सभामंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की तस्वीर का पूजन अर्चन आरती हरिभक्तोने क्रमशः करके सभा में धर्मवंशी आचार्य ही अपने गुरु हैं यह अनेक प्रयत्नो के द्वारा साबित किया।

- हेमराजभाई चोटलीया

कोलोनीया (I.S.S.O., U.S.A.) श्री स्वामिनारायण मंदिर

अपने कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से और महंत स्वामी देवप्रसाददासजी और शास्त्री स्वामी ने चातुर्मास के नियमों के विषय सुंदर समझ प्रदान की। वामनजी की कथा का वर्णन किया। आई.एस.एस.ओ. संचालित "सेवा" की टीमने अपने मेडिकल क्लिनिक में अनेक नामांकित डोक्टरो अनेक रोगीयों का चेकअप करके योग्य निदान किया। महंत स्वामी देव स्वामी और ईश्वर स्वामी ने डोक्टर का और गुजरात दर्शन के तंत्रीश्री सुभाषभाई उपाध्याय का बहुमान किया था। कोलोनीया मंदिर में आगामी पाटोत्सव अगस्त में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से मनाया जाएगा। ऐसा एलान किया गया।

- प्रवीणभाई शाह

छपैया धाममें रजत द्विशताब्दी जन्म जयन्ती महोत्सव प्रसंग पर आनेवाले देश-विदेश के हरिभक्तों को सूचना

सर्वोपरि तीर्थधाम छपैया में इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान के रजत द्विशताब्दी जन्म जयंती महोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. २५-१०-०६ से २७-१०-०६ तक सम्पन्न होगा। इस प्रसगं पर आनेवाले हरिभक्तों के लिये रहने की उत्तम व्यवस्था की गयी है। अधोनिर्दिष्ट पते पर या फोन पर ता. ३०-९-०६ तक सम्पर्क करने की सूचना दी जात रही है। जिससे आप सभी की उचित व्यवस्था यथावत हम कर शकें।

नाम, पता, फोन नं., कुल संख्या, किस विस्तार से आप आने वाले है, छपैया कितनी तारीख को पहुंच रहे हैं, छपैया में कितने दिन रु कना है, प्रवास मार्ग की सम्पूर्ण जानकारी।

१.	अहमदाबाद	भावसार पंकजभाई	मो. ९९२५८४८२४९ ● (रे.) (०७९) २७६२०४९९
२.	महेसाणा - कुकरवाडा	पटेल भक्तिभाई	मो. ९४२६५७२६०६ ● (रे.) (०२७६३) २५३०८५
३.	पंचमहाल - कोठंबा	काछिया अश्विनभाई	मो. ९९७९४२२५०० ● (रे.) (०२६७४) २३०५२४
४.	साबरकांठा - अरोडा	पटेल नवनीतभाई	मो. ९८७९७५०४३९ ● (रे.) (०२७७८) २४०४३९
५.	मूली - सुरेन्द्रनगर	झाला शैलेन्द्रसिंह	मो. ९८२५३८६३७० ● (रे.) (०२७५२) २८३८८५
	हलवद	जोबनपुत्रा चिरागभाई	मो. ९८२५१६८७८१ ● (रे.) (०२७५८) २६०१५८
६.	भूज	-	

उपरोक्त निर्देश के अनुसार जानकारी करके समय से पूर्व अपनी पूर्ण रुपरेखा भेंज कर आयोजन को सफल बनाने के सहयोग हेतु निवेदन।

नोट : महोत्सव के समय स्वयं सेवक के रुप में जो सेवा करने के इच्छुक हैं ऐसे हरिभक्त श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय, श्री स्वामिनारायण कालुपुर, अहमदाबाद का संपर्क करें।



कांकरिया मंदिर में शोभायमान भव्य झूलादर्शन ।



जीवापर (हालार-मूलीदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर महापूजा की आरती उतारते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।



धोलका मंदिर में भव्य झूला दर्शन ।



चराडवा मंदिर में धूनि प्रसंग पर लाभ लेते हुए गाँव के भक्तजन ।



नारायणघाट मंदिर में नूतन भोजनालय का उद्घाटन प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद हाथों से सम्पन्न ।



नारायणघाट मंदिर में कलात्मक भव्य झूलोतत्सव दर्शन ।

SHREE SWAMINARAYAN REG. NO. GUJ-581



चराडवा मंदिर में रजत द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में २२५ वस्त्री की ठाकुरजी की आरती उतारते हुए प.पू. महाराजश्री ।



Praful Kharadi

गुरु पूर्णिमा के दिन अहमदाबाद मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का सत्संगी